अमर क्रान्तिकारी शहीद
राजनारायण मिश्र
की
आत्म-कथा

संग्रहकर्ता—
झारखण्डे राय [क्रान्तिकारी समाजवादी]

प्रकाशक—
क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी यू० पी० ब्राञ्च

मूल्य १।)

संग्रहकर्ता के दो शब्द ।

नजरबन्दी के दौरान में ही मैं सन् १९४३ की १६ वीं जुलाई को लखनऊ-बाराबंकी षड़यंत्र के सम्बन्ध में फतेहगढ़ सेन्ट्रल जेल से जिला जेल लखनऊ लाया गया। यहीं पर मेरा शहीद राजनारायण मिश्र से, अप्रत्यक्ष रूप से, पत्रों द्वारा परिचय हुआ। मेरे पहले राजनारायण जी का और जोगेश चटर्जी का पत्र व्यवहार होता था; किन्तु मेरे आने पर चटर्जी के स्थान पर मुझ से होने लगा और फांसी के तीन घंटे पहले तक यह सिलसिला जारी रहा। उनके पत्रों की मुख्य २ पत्र-प्रतिलिपि जीवनी में दी हुई है। उनके पत्र मेरे पास निधि के रूप में हैं। वे हमारे लिए आदर्श थे और भविष्य में भी रहेंगे। उनके पथ पर चल कर उनकी प्यारी पार्टी-क्रान्तिकारी समाजवादी पार्टी-सफलता प्राप्त करेगी और भारतीय स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद समाजवादी-क्रान्ति को सफलता तक पहुँचा सकेगी, तथा भारतीय शोषितों का उचित नेतृत्व कर सकेगी, ऐसा विश्वास शहीद राजनारायण मिश्र को अन्तिम समय तक रहा। मैं उन्हें अपने साथी और बन्धु रूप में पाकर अपने को परम सौभाग्यशाली समझता हूँ।

मूल जीवनी संक्षिप्त आत्म कथा के रूप में उस शहीद के ही शब्दों में दी गई है।

हम उन्हें कभी नहीं भूल सकते! मरने में इतना आनन्द? जीवन में पहले-पहल एक क्रान्तिकारी-शहीद देखा!! क्या वह दृश्य भुलाया जा सकता है? भारत को ऐसे शहीदों पर गर्व करना उचित ही है।

भारतीय क्रान्ति एवं स्वतंत्रता के लिए अपना सब कुछ बलिदान करने वाले जीवित शहीद श्री जोगेश चटर्जी ने शहीद राजनारायण को, उसके अमर बलिदान के चन्द दिनों पहले निम्नलिखित भाव का पत्र लिखा था :—

'आपको मैंने देखा नहीं किन्तु आपका नाम मुझे अच्छी तरह याद है। माखन लाल से आपके बारे मे बातें होती थीं।

"आज आपसे क्या कहूँ, समझ में नहीं आता। आप एक शहीद हैं, मातृभूमि की सेवा के लिये बलि चढ़ने की प्रतीक्षा में काल-कोठरी में बैठे हैं। आज हम मे और आप में कितना अन्तर है? आज हम आपको कोई 'तसल्ली नहीं दे सकते हैं। आप को तो उसकी कुछ आवश्यकता भी नहीं है!!

'हम कितने असमर्थ हैं! कितने कमजोर हैं!! एक बीर भाई की फांसी होने जा रही है, किन्तु हम उसकी कोई सहायता नहीं कर सकते! न दर्शन ही कर सकते हैं न बातें ही। देशवासी आपको बचा नहीं सकेंगे! कैसी दयनीय स्थिति है!! इस समय परिस्थिति ऐसी है कि कोई भी प्रयत्न सफल होना अत्यन्त कठिन है। कैसा अच्छा होता अगर आज आपके स्थान पर मैं होता और आप होते मेरे स्थान पर! मैं इस अवस्था का हूँ कि मुझे दुनियाँ मे अधिक दिन नहीं रहना है, और आप ऐसे शक्तिशाली युवक को तो भविष्य मे बहुत कुछ करना है—आप कर सकते हैं। किन्तु

हम चाहते कुछ हैं, होता कुछ और ही है। बङ्गाल से पंजाब तक मेरे कितने युवक साथी फांसी से तथा गोली खाकर शहीद हो गये, लेकिन मेरा तो दुर्भाग्य! सिर्फ दुःख के बोझ को लेकर व्यथित जीवन व्यतीत कर रहा हूँ।"

'आज आप जैसे ही नवयुवक भगत सिंह की याद आती है। अपने साथियो के साथ वलिवेदी पर चढ़कर उन्होंने भारत मे जीवन फूंक दिया था। आप भी थोड़े ही दिनो मे फॉसी पर चढ़ जायेंगे। हम आपको नहीं वचा सकेंगे, न देख ही सकेंगे। किन्तु मैंएक बात जानता हूँ। आपके शहीद हो जाने पर इस प्रान्त मे हजारो राजनारायण पैदा हो जावेंगे, और जिस कार्य को आप अधूरा छोड़ कर जा रहे हैं उसको पूरा करेंगे। शहीदों के खून से ही शहीद पैदा होते हैं। मुझे अपने जीवन मे जब कभी कमजोरी आई तभी शहीद साथियों को याद करके नया जोश पैदा हो गया। आपके लिये यही एक तसल्ली है।'

ऐसा ही एक पत्र भेजा गया था जिसे उन्होने (का० राजनारायण ने) जौनपुर के श्रीराम शिरोमणि (जिन्हे जौनपुर के वॅधवा-केस मे सजाये मौत हुई थी। परन्तु जनमत के दवाव से नौकरशाही और साम्राज्यशाही को इनकी तथा इनके ४ और साथियों की प्राणदण्ड की सजा आजन्म काले पानी मे परिवर्तित करनी पड़ी) जो वहीं फांसी की कोठरी मे थे, को भी दिखाया था। इसी पत्र के बाद से पत्रव्यवहार प्रारम्भ हुआ था।

फांसी के दिन जेल बन्द होने के बाद जो शोक-सभा हुई थी उसके सभापति स्थान से का० चटर्जी ने कहा था:—

"मेरे अनेक प्राण प्रिय मित्रों ने अपने को स्वाधीनता की वेदी पर बलिदान कर दिया है, फांसी के तख्ते पर वे झूल गये हैं, किन्तु शहादत के ठीक पहले दिन सिर्फ इन्हीं को देख सका हूँ। इतनी खुशी से मृत्यु को आदमी आलिंगन कर सकता है, यह केवल मेरे लिये ही नहीं, बल्कि पुराने जेल-कर्मचारियों के लिये भी, आश्चर्य-जनक घटना थी। फांसी की कोठरी में (बङ्गाल में) कन्हाई लाल दत्त का ९ पौंड वजन बढ़ गया था। ऐसे ही इनका (का० राजनारायण का) भी ६ पौंड वजन बढ़ गया था। यह एक ही बात सिद्ध करती है कि मौत को इस वीर देशभक्त ने कैसे ग्रहण किया।"

झारखण्डे राय
जिला जेल लखनऊ
२०-११-४५

अमर शहीद राजनारायण मिश्र की आत्म-कथा

मेरा जन्म सम्वत् १९७६ के माघ माह में बसन्त पञ्चमी के दिन हुआ था। मेरे पिता जी गरीब थे, किन्तु कनौजिया ब्राह्मण परसू के मिश्र थे। इसी कारण उनकी शादी हो गई, नहीं तो गरीब के साथ अपनी कन्या कौन ब्याहता ! मेरे ननिहाल वाले सम्पन्न व्यक्ति हैं। उनके पास जमींदारी भी है। उन्हीं के यहां से मेरे पिता जी के प्रारम्भिक-जीवन का निर्वाह होता था। मेरी माता जी से पांच भाई और दो बहनें उत्पन्न हुईं थीं। बहनें सभी भाइयों से बड़ी थीं। मैं सब भाइयों में छोटा था। मेरी माता जी बड़ी वीरांगना स्त्री थीं। कई बार उन्होंने लाठियों से डाकुओं का सामना किया और उन्हें मार भगाया। मेरे गॉव में एक बहुत बड़ा बदमाश, नीच प्रकृति का दुष्ट रहता था। उसने एक दिन मेरे बड़े भाई को मार दिया। मेरी माता जी ने प्रतिज्ञा किया कि जब तक उस दुष्ट को उसकी नीचता का दंड न दे लूंगी, अन्न-जल न ग्रहण करूँगी। संध्या-काल तक उस नीच व्यक्ति को मार कर ही मेरी माता जी ने दम लिया और उस कापुरुष से कुछ करते न बना। मेरे पिता जी अत्यन्त सीधे व्यक्ति थे। किसी के कहने से वे आम के पेड़ को इमली का पेड़ तक कह देते। मेरी माता जी का देहान्त बहुत

पहले हो चुका था। उस समय मेरी आयु केवल दो साल की थी। एक बार मेरे भाई ने माता जी की बात का जवाब दे दिया। माता के कोमल हृदय पर कठिन आघात हुआ। भावुक मातृ-हृदय उसको सहन न कर सका। उसी दिन संध्या-काल गांव में सब के घर खुशी २ मिल आईं और घर आकर फांसी लगा लिया। मैं उस नन्हीं-सी आयु में ही मातृ-सुख-विहीन हो गया। मेरे गाव का नाम भीपमपुर है। वह कठिना नदी के किनारे बसा है। मेरे पिता जी का नाम पंडित बलदेव प्रसाद मिश्र और माता का नाम तुलसी था।

माता जी के स्वर्ग-वास के पश्चात् मेरे लालन-पालन का भार मेरी बडी बहन पर पडा। मेरे बहनोई का चरित्र अच्छा न था। वे लम्पट व्यक्ति थे। इसी कारण मेरी बडी बहन प्रायः मैके ही मे रहा करती थीं। थीं तो वे मेरी बहन किन्तु मेरे लिये तो वे माता तुल्य थीं। सात साल की आयु मे मुझे अपने ही गाव के प्राइमरी-स्कूल मे पढ़ने के लिये बिठाया गया। प्रारम्भिक-शिक्षा वहीं हुई थी। इसी समय मेरे विचार कुछ २ बदलने लगे थे। जब मैं दर्जा ४ मे पढ़ता था, उसी समय गान्धी जी द्वारा सचालित सन् १९३० का सविनय-अवज्ञा-आन्दोलन पूरे जोर-शोर से चल रहा था। मुझको आन्दोलन सम्बन्धी बातें सुनने मे आनन्द आता था। भीपम पुर गांव में एक व्यक्ति इन्ट्रेन्स तक पढ़ा था। अन्य कोई व्यक्ति उस गांव में अङ्गरेजी नहीं जानता था। उसी व्यक्ति से भारतीय क्रान्तिकारी युवकों की कहानियां सुनने का पहले अवसर

मिला था। उस व्यक्ति ने सन् ३० के आन्दोलन में ६ माह की सजा भी काटी थी। तथा उन पर उसी समय एक वम-केस भी चला था। इस काण्ड ने और भी मुझको क्रान्तिपथ की ओर झुका दिया था। मैंने अपने गांव में लड़कों की एक वानर-सेना संगठित की थी। उसमे ४० वानर थे। इन वानरों का कार्य था, जो कोई विदेशी टोपी पहने मिल जाता था उससे तुरत उतरवा लेते थे। पुनः उसे जला देते थे। राष्ट्र तथा देशभक्ति के गाने भी सब मिल कर गाते थे। इन वानरों को अपने २ घर से खुली आजादी थी इसी समय सरदार भगतसिंह को मृत्यु दण्ड दिया गया था। देश मे चारों ओर त्राहि २ मची थी। मुझको भी उस वीर प्रातः स्मरणीय सरदार की पुकार सुनाई दी। मैं उसे अनसुनी न कर सका। उसी दिन अपने हृदय में मैंने प्रतिज्ञा की 'जव तक देह में प्राण है ब्रिटिश हुकूमत के नींव की एक २ ईंट उखाड़ डालूंगा। चाहे इस प्रयास में मुझे भी फांसी की रस्सी क्यो न गले लगानी पड़े। उसे हृदय से स्वागत करूंगा।' सन १६२१ के असहयोग-आन्दोलन में मेरी माता जी, वड़ी वहन तथा गांव की कई अन्य महिलायें जेल गई थीं। चार साल में गांव के स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो गई। किन्तु देश-प्रेम की जो आग मेरे हृदय में जल चुकी थी वह वढ़ती ही गई।

भीपम पुर से तीन मील दूर सिकन्दरावाद नामक ग्राम में मिडिल स्कूल था। वहाँ मुझे भरती करा दिया गया। इस वीच में मेरे वड़े भाई साहव ने गांव के एक दुष्ट व्यक्ति को मार डाला था।

वह गांव वालों को बहुत परेशान करता था। पुलिस का एजेंट था और उनकी सहायता से लोगों को दंड दिलवाया करता था। मेरे भाई साहब को सात साल की सजा हो गई थी। वे पूरी सजा काट कर छूटे थे। यह उस समय की बात है जब मैं मिडिल स्कूल के दर्जा ६ में पढ़ता था। मेरे (किसान) परिवार की दशा अत्यन्त हीन थी। थोड़ी सी खेती थी। उसी से गुजर बसर होती थी। जीवन-निर्वाह का और कोई साधन न था। मेरे चारों भाई मिडिल तक पढ़े थे। आगे कोई न पढ़ सका था।

इसी समय मेरे गांव के ही एक व्यक्ति मेरे जीवन-मरण के साथी बने। उनके विचार भी मेरी ही तरह के थे। सदा क्रान्तिकारी विषयों पर ही हम लोगों में बातें हुआ करती थीं। सन् १९३६ में मैंने मिडिल पास किया। आगे शिक्षा-प्राप्ति का कोई साधन न था। घर की आर्थिक दशा इस योग्य न थी कि उच्च शिक्षा का कोई प्रबन्ध हो सकता। मेरे बड़े भाई ने एक सेठ के यहां मुनीमी पढ़ने के लिये मुझको भेज दिया था। वहां एक साल तक मैं मुनीमी पढ़ता रहा, किन्तु मेरा जी इस धन्धे में तनिक भी नहीं लगता था। मेरी मातृ-तुल्य बड़ी बहन भी इसी साल मर गई। कोई भी सहारा देने वाला नहीं रहा। उस समय मेरा सोलहवां वर्ष था। मैं अत्यन्त खिन्न और परेशान रहता था। गांव के निकट कोई अंगरेजी स्कूल न था। उन्हीं दिनों गोला-गोकरननाथ में जनता की ओर से एक हाई-स्कूल खुला था। वहां के हेड-मास्टर बनारस जिले के रहने वाले बहुत ही सुन्दर विचारों के व्यक्ति थे।

वे मेरे मकान के निकट ही रहा करते थे। मेरे पिता जी के एक भाई और थे। उन्हीं की धर्मपत्नी गोला-गोकरन नाथ में रहती थी। उन्हें मुझसे तनिक भी प्रेम नहीं था। अपनी देह के अतिरिक्त उनके पास अपना कोई नहीं। उनके पास सम्पत्ति भी प्रर्याप्त है। उनका मकान पक्का बना है। उन्होंने कभी एक पैसा मुझे नहीं दिया' उन्हीं ने एक हजार रुपया उस पब्लिक स्कूल मे दिया था। इसी कारण हेड-मास्टर मुझे जान गये थे। उनके विचार भी देशभक्ति से पूर्ण थे। उनमें सच्ची लगन थी। उनसे मैंने अपने हृदय की बात कह दी। हेड-मास्टर ने सब बात सुनकर मुझे पढ़ने की सलाह दी। उन्हीं की कृपा से मेरा नाम छठवें दर्जे में लिख लिया गया। और उन्होंने मेरी फीस माफ कर दिया। मेरे गांव के वे साथी भी मेरे ही साथ पढ़ने लगे। हम दोनों मित्रों का साथ अधिक दिनों तक रहा।

सन् १९३७ मे सीतापुर जिले में (मई के २७, २८, २९ तारीखों को) प्रान्तीय-युवक-संघ का वार्षिक अधिवेशन हुआ था। सम्मेलन के प्रधान श्री एस० एन० राय थे। मैं भी वहां गया था। यह पहला ही अवसर था जब मैंने गांव के बाहर देश के युवकों को देखा। वहां भूपेन्द्रनाथ सान्याल, राजकुमार सिनहा आदि भूतपूर्व क्रान्तिकारी बन्दी तथा आजमगढ़, बलिया, गोरखपुर, जौनपुर के अनेक नवयुवक थे। उसमें आजमगढ़ के एक साहब (श्री फूलबदन सिंह) मंत्री चुने गये थे। सम्मेलन तीन दिनों तक होता रहा। कई एक साथियों से मेरा परिचय भी हो गया। कइयों से

मैंने अपने हृदय के उद्‌गार प्रकट किये। परन्तु किसी भाई ने मेरा हाथ नहीं पकड़ा। और न मुझे रास्ता ही किसी ने सुझाया।

मेरा अब यही काम था, जहां भी कहीं बैठक सुनते वहां पर जाते। परन्तु मेरे हृदय की बात किसी ने भी नहीं सुनी। सेठ दामोदर स्वरूप जी से भी भेंट की। किन्तु कुछ हासिल न हुआ। लाचार होकर हमने, अपने ही दर्जे के पांच साथियों ने एक पार्टी तथा उसके लिये तीन प्रतिज्ञायें भी तैयार कीं और कार्यक्रम बनाया। पार्टी का नाम "मातृ-वेदी" रखा गया और उसके चौदह नियम बनाये गये। हमारी पांच आदमियों की यह पार्टी बनी। हमारे पास इस समय कोई Arms न था। अब हमने पहले हथियार (Arms) लेने का प्रयत्न किया। एक रिवाल्वर १८४) रु० मे मिलता था। हम उसे खरीदने गये परन्तु वह चीज़ हमें न मिल सकी। निराश लौटना पड़ा। मैं कक्षा ८ मे पढ़ रहा था। इस समय मार्च के महीने में मुझसे तथा एक धनी घर के लड़के से झगड़ा हो गया। उस स्कूल से हमारा Expulsion हो गया। हमारी वार्षिक-परीक्षा मे कुल १८ दिन शेष रह गये थे। हम तीनों साथियों ने अपना नाम लखीमपुर क्षत्रिय-हाई-स्कूल मे लिखाया। परीक्षा में भी उत्तीर्ण हो गये। गर्मियों की छुट्टी मे हम घर आये। देहात के गांवों में जाते और किसानों की तकलीफें सुनते थे। भरसक उन्हें दूर करने का प्रयत्न करते थे। कांग्रेस के मेम्बर भी बनाते थे। अपने आगामी कार्यक्रम पर विचार करते। गर्मी की छुट्टी समाप्त होने के बाद हम दो साथियों ने लखीमपुर धर्मसभा-

हाई-स्कूल मे नाम लिखाया। एक साथी ने ओयल मे अपना नाम लिखवाया। हमारे जिले मे एक बम-पार्टी थी। सन् १९३० के आन्दोलन मे पुलिस कप्तान तथा कोतवाल ने हमारे जिले में बड़ा जुल्म किया। उन्हीं के मारने के लिये इस पार्टी ने बम बनाये थे। बनाते समय एक बम फट गया जिससे एक आदमी के हाथ की उँगलियां उड़ गई थीं। इस केस मे कुल १८ आदमी थे। सबको पांच ७ साल तक की सजा इसमे हुई थी। उन्हीं साहब से हमारी भेंट हुई जिनकी उँगलियां कट गई थीं। उन्होंने कहा कि बिना Arms के हमारी पार्टी के अन्दर कोई भी शामिल नहीं हो सकता। हमारी हार्दिक इच्छा थी बम बनाने का उपाय सीखने की। उन्होने कहा कि पहले आप Arms लावें फिर बम बनाना सिखाऊँगा। हमने भी उनसे वादा कर लिया। हमारे एक साथी जो ओयल हाई-स्कूल में पढ़ते थे, उनसे एक मास्टर से झगड़ा हो गया था। वे ओयल छोड़कर लखनऊ नेशनल हाई-स्कूल मे पढ़ने लगे। हम दो साथी अभी वहीं पढ़ते थे। तीनों ने परीक्षायें दीं और पास हो गये। जो साथी लखनऊ में पढ़ते थे उनका परिचय दादा जी (जोगेशचन्द्र चटर्जी) से हुआ था। घर पर जब हम लोग इकट्ठे होते थे तो R. S. P. की बातें हमारे भाई साहब से हुआ करती थीं। इस समय हम दसवीं कक्षा मे पढ़ रहे थे। सावन के महीने में मेरे बड़े भाई साहब का हैजे से देहान्त हो गया। हम पांच भाई थे। उनमें मैं सबसे छोटा हूँ। चौबीस साल

की अवस्था में भाई साहब मरे थे। वे मुझसे बड़े तथा अन्य तीन भाईयों से छोटे थे। उनकी मृत्यु से मेरा सारा परिवार बहुत दुखी हुआ। बड़े भाई साहब ने पहले से ही साधु वेष धारण कर लिया था और देशाटन करते थे। एक भाई साहब अपनी ससुराल में रहते थे। घर पर मैं तथा मेरे एक और भाई साहब रहते थे। जो भाई घर पर रहते थे वेदिन रात जाड़ा गर्मी को कुछ भी नहीं समझते थे किसानों की सेवा कर के दो वर्ष के अन्दर उन्होंने अपनी सेवा से किसानों पर काफ़ी असर जमा लिया था। कम्बल जूता पहने माघ का पाला काट देते थे। पुलिस या रियासत के जरिये किसी प्रकार की ज्यादती किसानों के ऊपर नहीं होने देते थे। प्रतिदिन किसानों के कार्य में कहीं न कहीं जाया करते थे। अगर किसी किसान ने कुछ दे दिया तो उसे ले भी लेते थे। जमींदारों ने बहुत लालच दिया किन्तु वे जरा भी न डिगे। दो दिन खाने को मिलता तो एक दिन भूखे रहना पड़ता। कभी कभी तीन-तीन दिन तक भी फाके करने पड़ते थे। तीस अप्रैल तक हम लोगों की यही दशा रही परिवार में दो स्त्री, दो हम लोग, दो बड़े भाई साहेब की लड़कियां थीं। शेष औरतें अपने मां-बाप के पास रहती थीं।

हम जिस दिन यह वस्तु (रिवाल्वर) लाये थे उसी दिन प्रण किया था कि अपने स्वार्थ के लिये कभी इस वस्तु का इस्तेमाल न करेंगे। हमारे दिलमें कई बार आया कि उसकी सहायता से रुपया लावें, परन्तु फिर भी विचलित नहीं हुये। एक बार हमें तथा पूरे

परिवार को तीन दिन तक खाने को न मिला। हमारे गांव में एक धनी आदमी रहता था। उससे पैसा मांगा किन्तु उसने इन्कार कर दिया। सोचा, ऐसे नहीं देगा। हम रिवाल्वर में कारतूस भर कर चलने को तैयार हुये, किन्तु मेरी स्त्री ने देख लिया। मुझे समझाया यदि आपको यही करना है तो साथ में हमें भी ले चलिये खैर, कुछ सोचकर हम रुक गये।

चार अप्रैल को हमें ४००) अकस्मात् मिला। उसी से हमारे घर का काम चलना शुरू हुआ। मार्च के महीने में दादा जी (जोगेशचन्द्र चटर्जी) ने माखन को भेजा था, क्रान्ति की तैयारी करने के लिये। हमने तथा बड़े भाई ने क्रान्ति की तैयारी के लिये किसानों को खूब तैयार किया। रात दिन एक कर दिया। हमारे ग्राम में सौ नव-युवक मरने कटने को तैयार थे। पहली क्रान्ति में हमारे ग्राम से २८ युवक जेल गये थे। और ७६ हमारे मंडल से।

हमारे भाई साहब किसी को अपना शत्रु नहीं समझते थे। सैकड़ों जगह उन्होंने पुलिस तथा रियासत वालों से किसानों का पैसा वापस कराया था। हमारे इलाके में लगान के अलावा और कोई टैक्स वे वसूल नहीं कर पाते थे। भाई साहब मौत को कुछ भी नहीं समझते हैं। उनका कहना था, वह दिन सबसे अच्छा होगा जब मैं या मेरा भाई फांसी के तख्ते पर जायेंगे। उन्हें कई बार कड़ी २ परीक्षायें देनी पड़ी थीं। उनके हाथ जलाये गये, परन्तु वे टस से मस नहीं हुये। अपनी मीटिंग के लिये उन्हें आदमी इकट्ठा करने में विशेष प्रयत्न नहीं करना पड़ता था।

दिसम्बर को हम लाये थे। हमारे भाई ने अभी रिपोर्ट नहीं की थी। बगैर छुट्टी लिये दौड़ते हुये हमारे पास आये। मैं अपनी ससुराल गया हुआ था अतः घर पर न मिल सका। हमारे भाई साहब जब ससुराल गये तब मैं घर पर आ गया। आधी रात के समय भाई साहब आकर हमसे मिले। उन्होंने कहा, तुम्हीं रिवाल्वर लाये हो। हमने कहा, हम नहीं लाये। परन्तु उन्हें हमीं पर सन्देह था। उन्होंने मुझसे कहा, मेरी रोजी पर क्यों लगे हो ? यदि तुम्हें रिवाल्वर ही चाहिये तो मैं दूसरा दे सकता हूँ और कुछ रुपया भी, वह मेरा सर्विस रिवाल्वर है उसे वापस कर दो। बहुत समझाया भी—पढ़ाई तुम्हारी जाती रहेगी। अभी हमने रिपोर्ट भी नहीं की है। परन्तु हमारी समझ में कुछ भी नहीं आया। हमने वापिस करने से इन्कार कर दिया। हमारे भाई जो घर पर थे, उन्हें एक साल की सजा १२ दिसम्बर को हो चुकी थी—एक व्याख्यान देने मे। थानेदार साहब ने जाकर हमारे नाम रिपोर्ट की। वहां से जांच के लिये एक इंसपेक्टर आया था। उसने करीब १२ स्थानो पर तलाशी ली। हमारे साथियों ने उस समय यही विचार किया था कि पकड़ने के पहले हम फौरन जेल चले जावें। अतः हमने ऐसा ही किया। हम ६ जनवरी सन् ४१ को स्पीच दे कर जेल चले गये। उसी दिन से हमारी पढ़ाई का भी अन्त हो गया। १६ जनवरी को मुझे एक साल की सजा D I R. मे मिली थी। हमारे जेल चले आने पर पुलिस वालो का हम पर किसी तरह का उपाय न चल सका। केस भी नहीं चला क्योंकि

रिवाल्वर बरामद नहीं हुआ। हमारे भाई साहब मुअत्तल कर दिये गये थे सात माह बाद उन्हें फिर जगह मिली। उन्हें बहुत परेशानी उठानी पड़ी। इस पर भी वे मुझसे एक बार जेल में मिलने भी आये थे। वे रिवाल्वर वापस मांगते थे। २६ जनवरी को मेरा तबादला सीतापुर जेल हो गया। वहां पर कई जिले के लोग थे। बहुत से नवजवान भी मिले। अपने विचारों के युवकों की कमी न थी। २० अप्रैल को मेरा चालान बदायूं जेल को भेजा गया। वहीं पर हमने अपनी कुल सजा काटी। १ दिसम्बर सन् ४१ को मैं छूटा था। हमारे बड़े भाई साहब सदा हमारे साथ थे। हमें वीरता की शिक्षा देते रहे। हमारे भाई साहब १० नवम्बर को छूटे थे। हमारे सबसे बड़े भाई, जो साधु थे, पेचिश की बीमारी से नवम्बर में मर गये। उनसे छोटे वे थे जो ससुराल में रहते थे। उनके साले ने एक आदमी को मार दिया था। वे वहां थे भी नहीं, किन्तु उन्हें २० साल की सजा हो गई। घर पर हमारे पिता जी के सिवा कोई नहीं था। पिता जी भी १२ दिसम्बर सन ४२ को भाई साहब के शोक में मरगये। खैर, मरना-जीना तो लगा ही रहता है। 'हमारे घर पर खेती दो हल की थी। यही जीविका का जरिया था। वह भी सब बिगड़ गया। बैल वगैरः भी मर गये थे नौकरी सभी भाइयों में कोई भी करना नहीं चाहता था। हमारे सामने आर्थिक कठिनाई अधिक थी। कोई दुख बंटाने वाला साथी भी न था।

सन् ४२ ई० मई का महीना था। हमारे भाई साहब ने मुझे

फिर बुलाया। मुझसे कहा, तुम रिवाल्वर वापस कर दो। हम तुम्हारे ऊपरसे निगरानी हटवा देंगे तथा किसी और स्थानपर रिवाल्वर बरामद करवा देंगे। हमने साफ इन्कारकर दिया था। हम इस समय अपने जिले के नौजवानो को तैयार कर रहे थे—क्रान्ति के लिये जैसा कि दादा जी का आर्डर था। हमारे भाई साहब काफी प्रयत्न कर रहे थे। उनको पूरा भरोसा था कि हम अपनी ताकत से एक जिले पर अधिकार करने के लिये काफी थे। चार जून को P. C. C. की मीटिङ्ग थी। लखनऊ मे मैं भी इसी विचार से आया था कि दादा जी का दर्शन करूँगा। वे जो भी आदेश देंगे उसे अपना हृदय-रक्त देकर भी पूरा करूँगा। मैं उनके स्थान पर गया किन्तु उनका मुझे दर्शन न हो सका। परन्तु हमारी लगन कमान हुई। हम सामूहिक क्राति की तैयारी करने लगे। देशकी भी आवाज उस समय ऐसीही थी। चारो ओर से क्रान्ति का बिगुल-नाद ही सुनाई देता था। हमने भी अपने को क्राति की अग्नि के अदर झोंक दिया। देश के लिये (हमारी) जान की भी कोई कीमत नहीं है। आजादी या मौत के सिवा हमारे सामने कुछ भी नहीं था। हमारे ग्राम मे दफा २६ D. I. R. के १८ वारंट थे। चाहते तो हम भी आनन्द से 'बी' क्लास मे रह सकते थे। जेसा कि कुछ नेताओ ने किया। वे ही थोड़े से नेता लोग आन्दोलन के प्रोग्राम को जानते थे। किस तरह कार्य होगा, यह आम जनता मे नहीं फैलाया गया था। जो जानते थे वे अपने को आगमे झोंकना नहीं चाहते थे। जनता अधकार मे थी। कोई नेतृत्व

करने वाला नहीं था। हमारे नेताओं ने देश के साथ बड़ी गद्दारी की। मैं तो उन्हें बड़ी घृणा की दृष्टि से देखता हूँ। आफ़िसरों को सूचना देकर अपने आप जेल चले गये। जेल से सन्देश दे रहे थे—ये गद्दार, अबोध जनता के नाम। जनता के जी में जो भी आया उसने किया। थाने, डाकखाने, कचहरियों पर कब्जा कर लिया। उसके सामने नया प्रोग्राम रखने वाला कोई भी न था वह परेशान हो गई। तब तक क्रान्ति सफल नहीं हो सकती, जब तक हमारे देश की पार्टी चाकू की नोंक की तरह नहीं बनेगी, जब हम आगे बढ़ेंगे, अपने को मिटाने के लिये, तब जनता हमारा साथ देगी—उसी समय हमारी क्रान्ति सफल हो सकेगी। अस्तु; उस समय देश की आवाज बहुत जोरों से लग रही थी। देश अपने सच्चे पुजारी को पुकार रहा था। मां की काली मूर्ति हमारे सामने थी। उसका कुम्हलाया हुआ चेहरा मुझे अपने खून से साफ करना था। मेरा देश के ऊपर अन्ध-विश्वास था। हमें अपने खोने की भी कोई परवा न थी। पूर्ण प्रतिज्ञा की, जब तक ब्रिटिश-शासन की नींव भारत से न उखाड़ डालेंगे वापस घर न आवेंगे। मां ने ऐसा ही किया। तन-मन-धन से हमने मां की सेवा की। अभी वही धारणा है।

हमारे बड़े भाई साहब जनता को खुला विद्रोह करने के लिये इकट्ठा कर रहे थे। पूरे जिले को कब्जा करने का प्रोग्राम बनाया गया। हथियार इकट्ठा करने का कार्य हमारे जिम्मे सौंपा गया था। सबसे

पहले माने हमारी ही परीक्षा लेनी चाही। हमने भी माकी सेवा मे अपने को समर्पित कर दिया। हमारे ग्राम मे नौजवानो की अधिक तादाद थी। सभी अन्ध विश्वासी थे। तीन चार दिन तक रोज मीटिंग होती रही। हमारे ग्राम मे एक रिवोल्यूशनरी-पार्टी के पुराने मेम्बर थे। वे बम-कान्सपिरेसी मे सजा भी काट चुके थे। वह बडा गद्दार निकला। हमारे कार्य मे वह रोडा अटकाता था। काम होने नहीं देता था। मैंने अपनी वीर पत्नी से पूछा—'कहो, मुझे अपने आप जेल चला जाना चाहिये या देश की जो पुकार है वह कार्य मैं करूँ? परन्तु उसकी अन्तिम सजा फांसी होगी हमारी वीर-पत्नी ने यही मुझसे कहा—'नाथ! आप वही काम करे जिससे देश का लाभ हो, चाहे मुझे आपको ही क्यो न खोना पडे। मरना तो सभी को एक दिन है। देश की खातिर मरे तो मेरा सोभाग्य होगा।' सावन का महीना था। हमारी स्त्री ने उस दिन डिया पूजी थी। सुबह हमारे ग्राम मे प्रभात फेरी निकली थी। चारो ओर नौजबान तथा भाई साहब जनता को इकट्ठा करने गये थे—तहसील तथा थाने पर कब्जा करने के लिये। हमारे ऊपर हथियार इकट्ठा करने का कार्य सौंपा गया था। चौदह अगस्त को हम आठ साथी घर से निकले-मरने के लिये। हमारे घर मे हमारी स्त्री के सिवा कोई भी न था। हमारी स्त्री ने रोचना लगाया, आरती उतारी और कहा, 'नाथ! पीठ कहीं मत दिखाना। बस, हमारे आपके चरणों मे, यही अन्तिम शब्द हैं।' घर से अपने साथी एक ही साथ निकले। सभी फौजी ड्रेस मे थे। उसी दिन

हमने अपने को आजाद पाया। हमारे सामने आजादी के सिवा कुछ भी न था। खुला रिवाल्वर डाल कर सभी बड़े बड़े आदमियों का आशीर्वाद लेकर हम चले थे। जैसा प्रोग्राम बना था, उसी को पूरा करने।

हमारे पड़ोस के गांवों मे चार जमींदार थे जिनके पास कारतूसी बन्दूकें थीं। आठ मील के भीतर ही वे लोग थे। सोलह बन्दूकों की लिस्ट थी—एक दिन मे छीनने की।

हम आठ साथी अपने ग्राम से निकले। तिरंगा झंडा भी हमारे साथ था। हमारे ग्राम से तीन मील की दूरी पर एक सूबेदार था। पहले हम उसी के यहां गये। उससे हमने कहा—आपके पास बन्दूक है, उसे मुझे दे दीजिये। हमें सरकार के साथ लड़ना है। करीब १५ मिनट लगे थे—एक बन्दूक लेने मे। जमादार ने कहा—भैया रुपया चाहे तो ले लो। हमने रुपया लेने से इन्कार कर दिया। हमने कहा—आपका पैसा हमें नहीं चाहिये। चार बन्दूकें हमने भिन्न २ स्थानों से चार घंटे के अन्दर लीं। किसी भी तरह का झगड़ा या कोई भी घटना कहीं नहीं हुई। शान्ति के साथ चार कारतूसी बन्दूकें कारतूस सहित हमारे हाथ लगीं। एक बन्दूक हमारे हाथ में भी थी। तीन बंदूकें हमारे दूसरे साथियों के पास थीं। अब हम पांचवीं बंदूक लेने गये। हमारे ग्राम में रियासत महमूदाबाद की तहसील थी जिसमे २० सिपाही एक बंदूक और एक जिलेदार रहता था। ३८ हजार रुपया सालाना हमारे ग्राम के कोठार से वसूल होता था। २७ गांव का लगान वहां पर जमा

होता था। हमारी समझ मे जमींदार और गवर्नमेंट में कोई अन्तर नहीं है। दोनों शोषक हैं। और दोनों आजादी की लड़ाई के विरुद्ध एक साथ हैं। उनसे हम बहुत चूसे जाते है। वे आजकल गवर्नमेंट के हाथ हो रहे हैं। अस्तु, हम लोगो ने यही निश्चित किया—बन्दूकें भी मिल जांयगी और किसानो का लाभ भी हो जायेगा। कोठार के जितने रिकार्ड हैं सब जला देंगे। अतः हम लोग यही सोचकर कोठार के अन्दर गये। उस समय पानी बरस रहा था। सिपाही को अपने स्थान पर बैठे रहने का हमने आर्डर दिया। जिलेदार को भी आवाज दी। इतनेमें हमारा एक साथी कमरे के अन्दर चला गया, जहां पर जिलेदार लेटे थे—अपने आराम के कमरे में। साथी के पास एक बन्दूक थी। वह अन्दर घुस गया। किन्तु हम देख नहीं पाये। हम ७ आदमी बाहर खड़े थे। चार बन्दूकें बाहर भी थीं जिसमें एक मेरे पास थी। हमारा साथी जिलेदार को पकड़े बाहर निकला। उसकी बन्दूक की नाल बाहर निकली थी। हम सामने ही खड़े थे। मुझे मालूम हुआ, जिलेदार बन्दूक लेकर अन्दर से आया है—हम पर हमला करने। हमने अपने साथियों से कहा—खबरदार! साथ ही में बन्दूक की गोली भी छूट गई थी—हाथों की अंगुलियां ट्रेगर पर थीं। बन्दूकें बिलकुल नई थीं। मुझे नहीं मालूम किसकी गोली से फैर हुआ। हम लोगों का मारने का इरादा बिलकुल नहीं था। बन्दूकें भरी थीं। घोड़ा भी चढा था। बन्दूक की गोली जिलेदार के सीने में लगी और फौरन ही वे मर गये। पहले हमने समझा,

हमारा साथी ही मर गया। मारने का इरादा किसी का था नहीं। एक आदमी मर गया—सभी के पैर फिसल गये। सभी साथी घबड़ा उठे। सभी अकेले मुझे छोड़ कर बाहर चले गये। मैं अकेला ही अन्दर रह गया। हमने अन्दर जाकर वह बन्दूक भी उठाई। रिकार्डों में भी आग लगाई। बाहर आकर साथियों को बहुत फटकारा। उस समय कोठार में १८ हजार रुपया भी था। वह भी नहीं ले सके। चारों ओर हाहाकार मच गया। हमने सिर्फ पांच कारतूसी बन्दूकें छीन पाई थीं। अब मैं अकेला रह गया। सबने मेरा साथ छोड़ दिया। कत्ल में शरीक होने कोकौन हमारा साथ करता। जान पर खेलने वाले बहुत कम होते हैं। हमारे भाई साहब, जो आदमियों को इकट्ठा किये थे, उन्हें एक रेलवे स्थान में ले गये—हमारे पहुँचने के पहले ही उन लोगों ने स्टेशन जलाया, नहर की कोठी जलाई और पटरी उखाड़ी। पुलिस की लारी से उनसे मुठभेड़ हो गई, तीन आदमी मारे गये एक आदमी का अभी तक ठीक पता नहीं लगा। हम जिधर भी जाते थे, लोग कहते, डाकू आ गये भागो, भागो !! इत्यादि। तीन दिन तक परेशान रहे। थाने पर लोग हमला करने गये। मुखबिरी हो जाने से वहाँ पहले से ही पुलिस तैनात थी। हमारे बड़े भाई साहब गिरफ्तार हो गये थे। जब जनता ने हमारा साथ नहीं दिया, हम कर ही क्या सकते थे। पांचों बन्दूकें घर पर साथियों को देकर हम तीन साथी दिल्ली गये। वहां पर भी तोड़-फोड़ का कार्य जोरों से चल रहा था। चौदह दिन तक हम लोग वहां काम

करते रहे। १४ अगस्त को हमारा उपरोक्त काण्ड हुआ था। सोचा, चलो फिर अपने यहां चलें। वहीं पर मरेंगे। परन्तु हमारे साथी नहीं आये। मैं दिल्ली से वापस आ गया। लखनऊ मे दादा जी से भी मिलने की कोशिश की थी। हमारे यहां के कप्तान साहब वर्मा जी को ७४ घन्टे मे जिले से निकाल दिया गया—क्योंकि उन्होंने भीषमपुर मे गोली नही चलाई थी। हमारे ग्राम मे स्त्री, बच्चे तथा आदमी कोई भी नहीं रह गया था। पूरा का पूरा गांव खाली पड़ा था। कप्तान एक अंगरेज आया। गोरों की एक पलटन भी लारी पर गांव मे गई थी-साथ में पुलिस के इंसपेक्टर जेनरल भी थे। उन्होंने हमारे गांव को फुंकवाना शुरू किया। १६ मकान भी खोदवा डाले गये। उसमे मेरा तथा मेरे एक साथी का मकान भी जमीन मे मिला दिया गया। वे लोग करीब ४०० फावड़े लेकर गये थे। मेरे मकान में नमक भी बोया था। आदमियों को हल मे जोता गया था। आज्ञा दी गई-जितने आदमी मिलें, गोली से उड़ा दो। दो चार व्यक्ति पकड़ कर लाये गये। उन्हें गोली से उड़ा देने का आर्डर दिया गया। किन्तु अन्त मे उड़ाया नहीं। कहा—राजनारायन को लाकर हमारे हवाले करो। जो ऐसा करेगा उसे ४००) इनाम तथा एक बन्दूक भी देंगे। तीन सितम्बर तक मोहलत दी थी। I G पुलिस के चले जाने के बाद हमारे यहां जुल्म की हद हो गई। हमारे थाने मे एक नासिर अली नाम का बड़ा थानेदार था। उसे ७५ Armed पुलिस तथा २५ सवार मिले थे। वह जिसे खद्दर का एक सूत भी पहने देख लेता था

उसी के घर को लूट लेता था। चारों ओर हाहाकार मचा दिया। औरतों के गर्भ से बच्चे तक गिर पड़े। उन काली करतूतों को कहां तक लिखूं !! हमारे गांव में मिलिटरी का पहरा था। कोई भी नातेदार आता था, उसे खूब पीटते थे। मेरी खेती, माल सब जब्त कर लिया गया। मैं उसे (नासिर अली) मारने के लिये आया था। भाई साहब ने गाँव में जाने से मना किया और पास से रिवाल्वर ले लिया। मुझसे कहा, हमने उसके मारने का प्रबन्ध किया है। मगर वे कुछ भी नहीं कर सके। हमारे केस में १६ आदमी लिखाये गये थे। १० आदमियों को ३८-३८ साल तक सजायें स्पेशल-कोर्ट से हुई थीं। हमारे यहाँ एक साल तक Armed पुलिस का पहरा रहा। जब तक मैं पकड़ा नहीं गया, यदि एक दिन भी बेकार रहता तो मुझे चैन नहीं आती थी। देश के काम के सामने खाना पीना सब भूल जाते थे।

२८ सितम्बर सन् ४२ को मैं नागपुर (C. P.) में एक कांग्रेसी के यहां पकड़ा गया। दफा १२९ में दो माह तक रहे। पता मैंने गलत लिखाया था। दो माह बाद नागपुर जेल से छोड़ दिया गया। मेरे पास जो कुछ कपड़े थे वे सब उन्हीं कांग्रेसी के यहां रह गये थे। जो अभी तक नहीं छोड़े गये थे। इससे मेरे कपड़े भी नहीं मिले। वहां से मैं पुनः दिल्ली आ गया और जोरों से काम करने लगा। देश के चारों ओर से लोग वहां आये हुये थे। वहां की हाईकमांड से हमारा परिचय था। जो भी कार्य हमें करने को दिया जाता था, उसे करते थे। सारे देश का संचालन वहीं से होता था।

इसी समय मुझे बङ्गाल जाने का मौका मिला। मिदनापुर जिले में हम करीब २० दिन तक रहे। वहां पर मेरा विचार अच्छा बम बनाना सीखने का था। उस समय वहां पर अकाल पड़ा था। आर्य-समाज दिल्ली की ओर से हम गये थे। उन्हें हमारा पता लग गया। उन्होंने हमें अपने कैम्प से निकाल दिया और कहा—भाई, हम क्रांतिकारियों को किसी तरह की मदद नहीं दे सकते। आखिर मुझे वहां से निराश लौटना पड़ा। मैं पुनः दिल्ली में आ गया। वहीं काम करने लगे। उन दिनों गांधी जी का अनशन चल रहा था। हम हड़ताल करवा रहे थे। एक जुलूस निकाला गया। उसी के साथ में हम भी पकड़े गये। दफा १८८ में हमें छः माह की सजा मिली। दिल्ली तथा फीरोजपुर जेल में मैंने अपनी सजा काटी। सजा पूर्ण होने के बाद पहली अगस्त सन् ४३ को छूट गये। उस समय देश में श्मसान की शान्ति विराज रही थी। आन्दोलन कुचल दिया गया था। लोग त्रस्त थे। प्रतिक्रिया प्रारम्भ हो गई थी। कहीं छिटपुट राजनैतिक कामों का भी नामों निशान न था। हमें इस शान्ति से परेशानी मालूम होती थी। छूटने के बाद मैं बम्बई गया। वहां पर बहुत से भागे हुये लोग थे। परन्तु सब कागजी कार्रवाई में लगे थे। एक माह वहां रहने के बाद मैं अब चारों ओर से निराश हो गया—खाने पीने का भी अब जरिया न था। साधु होने के विचार से मैं *तीर्थ-स्थानों में गया*—हरद्वार, ऋषीकेश, बनारस—फिर वापस आये।

मेरे विचार इस समय उथल-पुथल हो रहे थे। इस समय कहीं चैन नहीं मिल रहा था। इरादा करके एक स्थान को जाते, दूसरे दिन फिर वहां से दूसरी जगह को चल देते। पैसा भी जो कुछ मेरे पास था किराये में चला जाता था। मैं देहरादून से लखनऊ आ रहा था। ट्रेन में एक साहब से परिचय हुआ। उनके भी दो सगे भाई इसी आन्दोलन में फरार थे। अभी तक पकड़े नहीं गये थे। उनसे मैंने अपना थोड़ा-सा परिचय दिया। उन्होंने कहा—आप मेरठ में आवें। वहां पर हम कोई सर्विस आपको गांधी-आश्रम में दिला देंगे। मेरे पास अब कोई जरिया शेष न था। सोचा—चलो नौकरी ही कर लेंगे। लखनऊ से १५ अक्टूबर सन् ४३ को मैं मेरठ पहुँचा। उन्हीं भाई से मिला। उन्होंने रहने का प्रबन्ध कर दिया। कई स्थानों में मुझे भेजा। गान्धी-आश्रम में भी मैं गया था। भाई राजाराम वहां के कार्यकर्ता थे। उनसे मैंने अपने दुख की कहानी कही। परन्तु उन्होंने इन्कारी का कोरा उत्तर दे दिया। कहा—'गान्धी-आश्रम' में क्रान्तिकारियों के लिये *स्थान नहीं; हमें कोई क्रान्ति थोड़े ही करनी है।'* मैं तो जानता था कि गान्धी-आश्रम के जितने कार्यकर्ता होंगे एक नवीन सांचे में ढले होंगे। वहां से निराश होकर अपने रहने के स्थान पर वापिस आया। उन्हीं अपने साथी से फिर कहा। १५ अक्टूबर शाम को हमारे साथी ने श्यामवीर सिंह खादी-भंडार-मैनेजर के पास भेजा। हमारे साथ में एक साथी और थे। वे श्याम वीर सिंह से परिचित थे। उनके रहने का स्थान वहां

उन्हीं के पास था। छः बजे शाम को मैं उनके मकान पर ग
मेरा परिचय मांगा। हमने उनसे कहा—दुखी आदमी । यही
हमारा परिचय है। पर वे इतने से सन्तुष्ट न हुये। उन्होंने मुझसे
कहा—'भाई मुझसे डरने की कोई बात नहीं। आप अपना परिचय
सही बता दें। हमने भी देश की खातिर १० साल की सजा काटी
है। हमसे आप निश्चिन्त रहे। किसी तरह का खटका नहीं।
शायद आप C I D. हों।'

१४ माह बाद आज हमारी जबान से प्रथम बार अपना
असली नाम निकला था। पूरा पता तथा केस के बारे में बता दिया
था। इनाम के बारे में भी उन्होंने पूछा था। मैंने कहा प्रथम ४००)
रुपये की घोषणा थी, अब ईश्वर जाने। उन्होंने कहा—आप परसों
आइयेगा। मैं आपकी मदद करूँगा और नौकरी भी दिला दूंगा।
वहां से मैं वापस आया और अपने मित्र से सब हाल कहा।
उनसे बतलाया कि "दादा" से (जिस नाम से कि ये श्याम
बीर सिंह पुकारे जाते हैं) मैंने अपना पूरा परिचय दे दिया है।
रहने का स्थान मैंने नहीं बताया था। १९ अक्तूबर को
सुबह मेरे मित्र के पास उन्होंने एक आदमी भेजा और कहलवाया
—गान्धी-आश्रम में दादा ने जगह तलाश की है। उस आदमी
को बुलाया है। मेरे मित्र मेरे पास आये। उन्होंने कहा—भैया,
इनके साथ चले जावो, देखो शायद काम बन जावे तो अच्छा
हो। हम उसी आदमी के साथ चल दिये। दादा के घर गये।
हम मेरठ कोतवाली के पीछे ठहरे थे। वहां से तीन

C. I. D. इन्सपेक्टर पीछे लगे। हमने साथ वाले आदमी से पूछा—भाई, ये तीनों खद्दर पोश हमारा पीछा कर रहे हैं। मुझे कुछ डर मालूम होता है। उसने कहा—जाने दो, शहर के आदमी हैं। हमें दादा के मकान पर वह आदमी ले गया। वह दादा के मकान के अन्दर गया और मुझे दरवाजे पर खड़ा कर दिया। जाने क्या २ उन लोगों में बातें हुई। आकर उन्होंने कहा—दादा साफ इन्कार कर रहे हैं और कहते हैं कि ऐसे आदमी की मदद करने से हम मजबूर हैं। मैंने कहा—फिर आप बुला क्यों लाये? तीनों पीछा करने वाले दादा के यहां पहले से ही पहुँच गये थे। मैं अपने स्थान को वापस चला। थोड़ी ही दूर चलने पर पीछे से गिरफ्तार कर के कोतवाली में बन्द कर दिया गया। मुझसे पता पूछा। मैंने सुल्तानपुर जिला तथा रहने का स्थान अमेठी बताया। क्योंकि गलत पता बता कर मैं दो बार पुलिस के हाथ से छूट चुका था—पकड़ने वाले साहबों के नाम ये थे—चौधरी दिगम्बर सिंह भूप C. I. D. इन्सपेक्टर, पंडित शंकर लाल तथा चौ० मुल्लग सिंह। पिछले दोनों असिस्टेंट सी० आई० डी० इन्सपेक्टर थे। दो घंटे बाद मुझे C. I. D. दफ्तर में ले गये। यह शहर के बाहर था। करीब ५० कर्मचारी बिना वर्दी के यहां पर थे। मेरा यह पहला ही मौका था इतने C. I. D. कर्मचारियों के बीच में जाने का। मुझको सबसे पहले लायन सिंह D. S. P. C. I. D. के सामने पेश किया गया। उन्होंने जल्दी

जल्दी मे मेरे घर का पता पूछा। मैंने भी उतनी ही शीघ्रता से उत्तर दिया। बहर हाल उन्हे यह विश्वास हो गया कि मैं वहां का रहने वाला नही था, क्योंकि ठाकुर लाखन सिंह पहले रायबरेली मे रह चुके थे। मैंने उस दिन कुछ भी नही बताया, न उन्होने परेशान ही किया। कुर्सी पर आमने सामने बिठा लेते थे। कुर्सी ही से रस्सी मे मुझे भी बाध देते थे। सभी को वहां से हटा देते। हमे शाम को ले जाकर लाल कुरती थाने मे बन्द कर दिया। सुबह फिर लाये और पूछना शुरू किया। इधर-उधर की बातें की। वहां से तो पूछ कर आये थे ही। मेरे सामने मेरा फोटो हुलिया तथा इनाम भी बताया। उसे हमारे केस के बारे मे पूरा परिचय था— क्योंकि वे बरेली मे रह चुके थे। मेरा जिला भी बरेली C. I. D. सर्किल मे है। वह जाच करने भी गया था। हमे अपना असली पता मजबूरन बताना पड़ा। तीन दिन बाद मुझे मेरठ जेल भेज दिया गया। दफा १२९ D. I. R. मे मुझे गिरफ्तार किया था। एक कागज लखनऊ भेजा गया और एक मेरे जिले को। १० दिन बाद उन लोगो ने फिर मुझे वापस मगाया क्योंकि मेरे जिले से सख्ती का आर्डर था। उन्होंने पूछना शुरू किया। धमकाया भी। तरह २ की यातनायें भी दीं। तीन दिन तक बराबर सोने नहीं दिया। चूतड़ों पर बर्फ की सिल्लिया बाधी। गुदा-स्थान मे मिर्च ठूंस दिया। मारपीट तो साधारण बात थी। इतना सब करके भी कुछ हासिल न कर सके। बार २ पूछते रहे—कहा रहे इतने दिन तक ? रिवाल्वर के बारे मे अधिक परेशान करते

थे। १२ दिन तक लगातार यही व्यवहार करते रहे। अन्त में हार मान कर फिर जेल भेज दिया। २६ नवम्बर को हमारा चालान लखीमपुर भेज दिया गया। वहां मेरे पैरों में बेड़ियां डाल दी गईं। मेरे ऊपर खास एक वार्डर की नौकरी लगी। मैं सबसे अलग रखा गया। हमारे जिले मे आतंक अधिक छाया था। कोई भी मुलाकात करने नहीं आता था। यहां तक कि मेरे साले ससुर भी नहीं आये। और कोई आये ही क्यों? दो माह तक मेरा केस नहीं चला। कुल १६ आदमी केस में थे जिनमें १० को जनवरी सन् ४३ में तीन केसों के सिलसिले मे ३८-३८ साल की सजायें हो चुकी थीं। स्पेशल-कोर्ट द्वारा छ आदमी फरार घोषित किये जा चुके थे। उनमे से मैं ही अकेला पकड़ा गया। लोअर-कोर्ट में मेरा केस चलना शुरू हो गया। मेरी तरफ से कलक्टरी के एक मामूली वकील थे जो बयान भर लिख लेते थे। वहां से खतम होकर मेरा केस सेशन कोर्ट में चला। वहां एक वकील १४०) पर किया गया। उसमे से १००) हमारे एक मित्र ने दिया था और ४०) कांग्रेस से मिला था। २७ जून को तीन बजे दिन के समय मुझे फांसी की सजा सुनाई गई। वैसे तो कोई देखने नहीं आता था किन्तु फैसले के दिन चन्द कांग्रेस-मैन तथा कुछ अन्य दर्शक भी आ गये थे। फैसला सुनाते ही मैंने 'इन्कलाब-जिन्दाबाद' तथा अन्य कई नारे लगाये। परन्तु दुख है कि साथ देने वाला उन दो सौ मे से कोई भी न निकला। मेरी स्त्री, भाभी, बहन, बहनोई सभी बहुत जोरों से रोते थे। परन्तु मेरे हृदय मे अपार प्रसन्नता

थी। चलते समय मैंने कामरेडी सैलूट किया और वहां से विदा हुये। मेरे पीछे कोहराम मचा था; किन्तु मां का पुजारी आनन्द मनाता चला जा रहा था। उस दृश्य का मैं वर्णन नहीं कर सकता कि मेरे हृदय में क्या क्या भाव उठ रहे थे। जेल में आने पर कपड़े बदले गये, मिट्टी के वर्तन मिले। और फांसी की एक कोठरी में बन्द कर दिया गया। उस रात में क्या २ भावनायें मेरे हृदय में उठतीं और विलीन हो जातीं, क्या वे भी चित्रित की जा सकती हैं ?

मुझे तीन दिन तक लखीमपुर जेल में रहना पड़ा था। इस बीच में दो बार मेरी मुलाकात भी हुई थी। वहां से मेरा चालान पहली जुलाई को लखनऊ आया। तभी से यहीं पर हूँ और शायद यहीं से प्राणान्त भी होगा। मेरे हृदय में कैसे कैसे विचार उठे तथा मनोभावों में क्या २ परिवर्तन होते हैं, यह सब किसी समय लिखूंगा।

यही मेरी थोड़ी-सी जीवनी है। मेरे पास पांच वंदूकें तथा रिवाल्वर हैं। मेरे न रहते भी मेरे हथियारों से ही देश का कुछ कल्याणकारी कार्य हो सके तो उससे मेरी आत्मा को शान्ति मिलेगी। भाई ! मैं आपके यहां क्या लिखूं !! हृदय में न जाने क्या २ लहरें उठनी रहती हैं। भूलें नहीं-यही मेरी अन्तिम अभि-लाषा है—

काल-कोठरी से लिखे गये अमर शहीद

कॉ० राजनारायन के पत्रों के उद्धरण

अपने पहली अक्तूबर वाले पत्र मे कॉ० राजनरायन ने योगेश बाबू के सम्बन्ध मे निम्नलिखित बिचार प्रकट किये थे। अपने उद्‌गार प्रकट करते हुये उन्होंने लिखा था —

'दादा की ही बदोलत हम आज गर्वित हो रहे हैं। उन्ही का आदेश लेकर में दोड़ा था। उन्ही के आशीर्वाद को स्मरण करते हुये हम जावेंगे। साथी ही अपने साथी को ऊंचे उठाते हैं, वही गिराते भी हैं। मैं जो कुछ भी कर सका आप ही लोगों का स्मरण करके कर सका।"

प्रिवी कौंसिल मे अपील के लिये उन्हें मोहलत मिली थी अपील सम्बन्धी नियमोपनियम गवर्नर के यहाँ से जेल पर आये थे। तथा वे सभी आवश्यक कागजात रजिस्टर्ड पोस्ट से उनके इष्ट मित्रों के पास भेजा गया था। उनके पहुँचने मे देर हो गई थी। कहीं कुछ गड़बड़ हो गया और कागजात अटक गये थे। मैंने (झारखन्डे राय) उन्हे सलाह दी कि-आप गवर्नर के पास २ सप्ताह की मोहलत के लिये और एक आवेदन पत्र लिख दें। उसका उत्तर देते हुये उन्होने उसी पत्र मे लिखा था—

"हमारे जीवन के बहुत थोड़े दिन शेष रह गये है। मे अब

जब शांति का समय हो जाता है, सैनिक को बहुत बेचैनी महसूस होती है। हम लोग इसी लिये पैदा ही हुये हैं। मैं भले ही न रहूँ—किन्तु हृदय आप जैसे देशवासियों के पास ही रहेगा। आप लोग चिन्ता न करें, मैं हंसते २ जाऊंगा। स्वतंत्रता—देवी अपने पुजारियों को यही प्रसाद प्रदान करती है। जो सभी भाइयों को मिलता है, वही मुझे भी मिला"।

वे कितने विनम्र थे, इसका उदाहरण भी उसी पत्र के निम्नांकित शब्दों से स्पष्ट हो जाता है :—

"रही आपने जो जीवन के हाल लिखने को कहा। भाई साहब, मैंने कोई ऐसे काम नहीं किये जिनके द्वारा उन पूज्य शहीदों की पंक्ति में खड़ा हो सकूं। मेरा तो जीवन ही अधूरा रहा। मैं तो देश की खातिर कुछ भी नहीं कर पाया। पानी के बुलबुले की तरह उठा और बैठ गया।"

किसानों का एक सच्चा क्रान्तिकारी जन-नेता दिखावट से कितना दूर हो सकता है—इसका यह ज्वलंत उदाहरण है।

५ अक्टूबर वाले पत्र को पूरा का पूरा देने का लोभ मैं संवरण नहीं कर पा रहा हूँ। इससे उस शहीद के मनोगत भावों की एक झलक मिल जाती है।

"श्री भाई साहब !

सादर वन्दे,

"आपका समाचार मिला। मेरे घर से पत्र आया था। नियमों (प्रिवी कौंसिल सम्बन्धी) के कागज वहां पर पहुँच गये। परन्तु

काफी समय बाद पहुँचे। मेरी अपील का प्रबन्ध कुंवर खुशवख्त राय कर रहे हैं। पैसा जमा होने की नौबत नहीं मालूम होती। पत्र मे लिखा है—हमारे ससुर को बुलाया है। अगर पैसे के बारे मे तै हो गया तो अपील हो जावेगी। ४००) मुझसे मांगते हैं। बाकी पैसा अपने पास से लगाने को कहते हैं। हमारे पास से ४००) तो दूर १००) का भी प्रबन्ध नहीं हो सकता है। न ४००) हम कर पावेंगे न अपील होगी। मेरी समझ में नहीं आता, जब कि लोगों को मेरी दशा मालूम है, किसी से छिपी नहीं, फिर भी हमसे कहते हैं। हमने उन्हें साफ लिख दिया है—आप अपील न करें। मुझे इसी में आनन्द है। मां हमें बुलाती है। मुझे शीघ्र जाना है। हमारे साथी मिलने की बाट देख रहे हैं। मां को जब तक मेरी सेवा लेनी थी, ली। अब मुझे बुला रही है—तो मुझे हँसते २ जाना चाहिये। शीघ्र ही आप लोगों के बीच से जा रहा हूं। मेरे हृदय में किसी प्रकार का दुख नहीं है। आजादी के लिये मरने वाले किसी के प्रति द्वेष-भाव नहीं रखते हैं। हँसते २ बलिवेदी पर चढ़ जाते हैं। किसी के भी प्रति कोई कटु वाक्य नहीं कहते हैं। जाने वाले का कौन साथ देता है। आप लोग किसी तरह की चिन्ता न करें। मां ने मुझे हँसने ही के लिये पैदा किया था। अन्तिम अंतिम समय में भी हंसते ही रहूँगा। यदि अगले सप्ताह तक रह गये तो फतेहगढ़ को पत्र लिखूंगा। भाई साहब (राम शिरोमणि) ने सुपरिंटेंडेंट से आपसे मिलने के लिये कहा था।

से मिलने की आज्ञा नहीं है, अतः उन्होंने आप को भाई कहा था अपनी बुआ का लड़का। सुपरिटेंडेंट काफी देर तक पूछता रहा। आज्ञा तो दे दी है किंतु जेलर ने कहा है— यदि राय की मुलाकात Due होगी तो मैं करा दूंगा। अब जेलर के हाथ मे है। चाहेगा तो आपका दर्शन हम लोगों को हो जायगा। हम चाहते तो यही हैं, कि आप सभी लोगो का दर्शन मुझे एक बार अंतिम समय मे हो जाये तो अच्छा था। (पत्र पहले का लिखा था। उसे राम शिरोमणि के जाने के बाद पूरा करके भेजा था।) भाई राम तो इलाहाबाद चले गये। अच्छा है उनके दो साथी भी वहीं हैं। हमे अपने से बिछुड़ने का दुख भी है साथ ही खुशी भी है। अपने घर के करीब पहुँच गये। वाह री मानवता, एक साथी दिया था उसे भी मुझसे अलग कर दिया। साथी जा रहे हैं जाँय। मैं भी जा रहा हूँ। चंद दिनों का ही तो साथ रहता। मुझे अब आशा नहीं है कि आप लोगों का भी दर्शन हो जावेगा मेरी उत्कट इच्छा थी, आप से मिलने की। परन्तु निरंकुश शासन जालिम सरकार के कारण आपका दर्शन न हो सकेगा।

आपका —साथी

१० अक्तूबर वाले पत्र को मैं ज्यों का त्यों देता हूँ।

" श्री भाई

सादर वन्दे,

"आपका समाचार मिला। मेरी स्त्री के भाई मेरी मुलाकात करने आये थे। उनका कहना था—कुंवर जो हमसे ४००) माँगते हैं। हमारे पास कहाँ से इतना रुपया आवे। उन्होंने मेरी स्त्री का जेवर बेच कर २००) उनके हवाले किया था। कुँवर जी ने ४०) उसी में से देकर लखनऊ भेजा था—चीफ कोर्ट फैसले की नकल के लिये। एक अर्जुन सिंह वकील हैं। उन्हीं के पास जमा कर गये थे। कुँवरजी ने उनके नाम पत्र भी दिया था। आठ अक्तूबर को पूरा रुपया लेकर आऊंगा—ऐसा कह गये थे। मेरी मुलाकात करने को भी कहा था। न मुलाकात को ही कोई आया न रुपया ही जमा हुआ। हवाई जहाज के जरिये चेक भेजा जाता है। अब क्या होगा? ११ अक्तूबर तक मियाद थी। अब केवल एक दिन शेष रहा है—हो. अब मुझे जाना ही पड़ेगा। भाई साहब, इसी गरीबी से परेशान हो कर मैंने अपनी जान की बाजी लगाई थी। देश आजाद हो, हम भी आनन्द से रहें। देखा भाई, कुँवर जी बहुत बड़े पूंजीपति हैं। वे हमारे जिले के कॉंग्रेस के कर्त्ता हैं। एक नौजवान, जो अपने जीवन की अन्तिम घड़ियाँ गिन रहा है, उनकी निगाह में कुछ नहीं है। उसके साथ नहीं, वे देश के साथ

विश्वासघात कर रहे हैं। हमारे नौजवान साथी इन पूंजीपतियों को नष्ट ही करके मानेंगे। मैं तो जा ही रहा हूँ—मेरा अन्तिम सन्देश देश के युवकों से कहना—पूंजीपतियों के प्रति, चाहे जिस जगह पर वह हों, कांग्रेस मे हों या और कहीं, मिटाने में कसर न रखें। हमारे देश का सारा पैसा हड़पने में इनका भी हाथ है।

भाई साहब, आजकल आपही की तरह मैं भी अपने को आप ही के पास पाता हूँ। सोता हूँ तो यही देखता हूँ कि आप सभी साथी प्रेम के फूल चुन-चुन कर मुझे हार पहना रहे हैं, खाना भी आपके साथ खा रहा हूँ। सफेद कपड़े आपने भेंट किये हैं, आप लोग गले से मिल रहे हैं। सभी साथी मुझे अपने हृदय से लगा रहे हैं, मेरे माथे मे रोचना लगा रहे हैं। मुझे बलिबेदी पर चढ़ने को बिदा कर रहे हैं। एक बहुत श्रान्त पथिक के रूप में मैं दिखाई देता हूँ। सामने एक गहरी और अत्यन्त विस्तृत नदी आ जाती है। आप लोग कितने साथी मुझे बिदा करने आये हैं। मुझे नाव पर चढ़ा कर आप सभी पुष्प-पात कर रहे हैं। देखते देखते मैं आपके सामने से ओझल हो गया। अकस्मात् मेरी नाव दरिया मे डूब गई। मैं एक नवीन स्थान मे पहुँच गया हूँ। वह स्थान नितान्त अज्ञात है। मैं चारों ओर आश्चर्य से देख रहा हूँ—मानों नींद से अभी-अभी आँखें खुली हों। यकायक क्या देखता हूँ कि हजारों नौजवान साथी हंसते-हंसते आ रहे हैं। वे लोग मुझे घेरे लेते हैं। तरह-तरह से प्रेम प्रदर्शन करते हैं। दो तीन शायद मुझसे परिचित जान पड़ते हैं। उन सभी लोगों ने देश का हाल

तथा शहीद-वृत्त के बारे में पूछा। मैंने आप सभी साथियों का संदेशा कहा और कहा कि आप लोगों का लगाया पेड़ बराबर बढ़ रहा है। वीर साथी अपने खून से उसे सींचते जा रहे हैं। आशा है आप के पेड़ में बहुत शीघ्र ही मधुर फल लगेंगे। उन फलों को खाकर देशवासी बहुत आनन्द मनायेंगे। और आपको आशीर्वाद देंगे। मैं भी उस नये स्थान में जाकर कौतूहल-वश हो गया। हमारे साथियों ने मेरी खूब आवभगत की। वहां भी साथियों ने अपने प्रेम की एक नगरी बसा रखी है, वहां पर पहुँचते समय देश के नौजवानों का वे भाई बड़ी धूम से स्वागत करते हैं ... । मैं तो आज कल यही देखता रहता हूँ। जागता हूँ तो इसी भावी-आनन्द में गुजरा करता हूँ। शहीदों के नारे कानों में गूंजा करते हैं। मैं फांसी के तख्ते के ऊपर तक अपने को पहुँचा हुआ पाता हूँ। यहां पर जो साथी (राम शिरोमणि) हैं, उनसे कई बार मैंने अपने स्वप्न की बातें कही हैं। मैं तो जिस समय सोता हूँ, यही देखता हूं—आप सभी साथी मुझे हार पहना रहे हैं। हमारे साथियो ने अन्तिम सन्देश नौजवानों के नाम कहने को कहा है। हम यही कह पाये थे—'साथियों प्रेम से रहो, प्रेम से पेड़ को सींचते रहना। हम शहीदों की याद भी इसी से हो जावेगी।' यही इतना कह पाये थे कि गला भर आया। सामने जल्लाद आ गये। आप सभी के बीच से लेकर मुझे चल दिये। आप सभी ने नारे लगाये। वे सभी मेरे कानों में अमृत के समान गूंजते हैं।

मुझे १८ ता० के अन्दर किसी न किसी दिन फांसी लग

जावेगी। हम आपका सन्देशा लेकर जा रहे हैं—अमर शहीदों के पास ......

आपका—राजू"

२१ अक्तूबर वाले पत्र में पार्टी के प्रति अपने मनोद्‌गार और विश्वास प्रकट करते हुये उन्होंने लिखा था:—

"R. S. P. ही देश को आजादी के पथ का सच्चा मार्ग बतायेगी।"

उसी पत्र के साथ उन्होंने देश के नौजवानों के नाम भी सन्देश भेजा था। उसकी अविकल प्रतिलिपि दी जा रही है।

"भारत का क्रान्तिकारी आन्दोलन सदा परिस्थितियों के अनुसार परिवर्तन शील एवं विकासोन्मुख रहा। समय-समय पर भारतीय-क्रान्तिकारी-चिन्ताधारा विभिन्न पार्टियों द्वारा व्यक्त एवं अभिव्यंजित होती रही—अर्थात अभिनव-भारत, अनुशीलन-समिति, युगान्तर-दल, गदर-पार्टी, H. R. A., पुनः H. S. R. A., तथा अन्य अनेक छोटे-छोटे ग्रुप, अन्ततोगत्वा इन अन्तिम तीनों तत्वों को मिला कर (अर्थात् सभी सच्चे क्रान्तिकारियों के प्रतिनिधि) R. S. P. का निर्माण हुआ। अर्थात् प्रायः ४० साल के पश्चात् भारतीय-क्रान्तिकारी आन्दोलन की व्यंजना केवल-मात्र एक पार्टी से होने लगी; अर्थात् R. S. P. द्वारा। अतः R. S. P. भारत के क्रान्तिकारी आन्दोलन से विकसित हुई है। उसकी प्रतीक एवं प्रतिनिधि है।

"अमर शहीद कॉ० चन्द्रशेखर आजाद के बलिदान के पश्चात्

प्राय: मृत एवं लुप्त-प्रायय: H. S. R. A. का संगठन पुनः एक बार १९३७ की मई के अन्तिम सप्ताह में कॉ वीरुपाक्ष आंगदी तथा कॉ० जगदीश दत्त शुक्ला के नेतृत्व में किया गया। उस H.S. R. A. ने २२ जनवरी सन् १९३९ को (अनुशीलन तथा अन्य लोगों को पार्टी में गूंथने के प्रस्ताव के आधार पर) अपने को R. S. P. में परिवर्तित कर दिया। उस दिन से H. S. R. A. का विकास R. S. P. मे उसी प्रकार हो गया जैसे एक दिन H. R. A. से H S R A. का हुआ था। अब H. S. R. A. के नाम का प्रयोग करने का नैतिक एवं वैधानिक अधिकार किसी को नहीं है। ये सभी ऐतिहासिक बातें R. S. P. के विभिन्न सदस्यों द्वारा लिखी विभिन्न पुस्तकों द्वारा विस्तृत रूप में जानी जा सकती हैं।

"R. S. P. निर्माण के लिये भारतीय-क्रान्तिकारी-सम्मेलन मार्च सन् १९४० मे रामगढ़-कांग्रेस-अधिवेशन के अवसर पर हुआ था। भारत की एक-मात्र क्रान्तिकारी-पार्टी यही है। अतः मैं सभी नौजवानो से अपील करता हूँ कि वे R. S P. मे सम्मिलित हो जायँ।

R. S. P.—जिन्दावाद

प्रार्थी:—

राजनारायन मिश्र

२०-१०-४४

भीषमपुर, पो० सिकन्दराबाद

जिला-खिरी, यू० पी०"

का० राजनारायन की अपील चीफ़-कोर्ट से खारिज हो जाने के बाद हम सभी लोगों को निश्चित हो गया कि किसी न किसी दिन उनका फाँसी के तख्ते पर चढ़ना अनिवार्य है। वह भी इसे जानते थे। प्रिवी कौंसिल की अपील से किसी को तनिक भी आशा नहीं थी। जीवन-मृत्यु के बीच झूलते हुये भी, जिसका एक-एक क्षण निश्चित मृत्यु की ओर ले जा रहा था, राजनारायन पार्टी को नहीं भूले थे। और अनेक प्रकार के राजनीतिक-प्रश्न किया करते थे। उन्हीं में से मैं कुछ प्रश्न नीचे दे रहा हूँ, ताकि पाठक उनकी देश-भक्ति तथा देश की जनता और तत्सम्बन्धी प्रश्नों के हल जानने की उत्सुकता की एक झाँकी पा सकें। उनके द्वारा लिखे प्रश्नों में कुछ इस प्रकार हैं:—

१—R. S. P किस प्रकार की शासन-प्रणाली चाहती है, और क्यों ? इसे विस्तार से लिखिये।

२—पार्टी के उद्देश्य, नियम, उपनियम एवं प्रतिज्ञा-पत्र आदि विस्तार से लिखिये।

३—क्रान्ति किन-किन वर्गों को लेकर होगी ? एक ही क्रान्ति होगी अथवा समाजवादी-समाज के पहले दो क्रान्तियां होंगी। उत्तर सकारण हो।

४—एक साथ कौन-कौन क्रान्तिया की जावेगी ?

५—जनता के सामने R. S. P. कुछ भी घोषणा स्पष्ट करेगी अथवा नहीं ?

६—अपनी पार्टी के प्रचार की क्या रूप-रेखा होगी ?

७—सदस्य कौन-कौन वर्ग के लोग हो सकेंगे ?

८—पार्टी जन-तंत्र चाहती है अथवा अधिनायक-तंत्र ?

९—क्या सभी वर्ग के लोग पार्टी के सदस्य हो सकते हैं ? अगर हां, तो क्यों ? क्या उससे पार्टी की हानि नहीं होगी ?

इसी २१ अक्तूबर वाले पत्र में उन्होंने पार्टी-सम्बन्धी मनोभाव निम्न प्रकार व्यक्त किये थे:—

"भाई साहब, मैंने आज पुनः यही निश्चय किया है कि जब तक जीवित रहूँगा R. S. P. को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने का प्रयत्न करूंगा, चाहे बलिदान ही होना पड़े। इसी के नाम पर क्रान्तिकारी-आन्दोलन में शामिल हुये थे और इसी का नाम लेते-लेते हंसते-हंसते भूल जाऊंगा। आशा है, पार्टी सदा भारत की शोषित जनता का सच्चा प्रतिनिधित्व करती रहेगी तथा एक दिन, जो बहुत दूर नहीं है, उसे तमाम शोषणों से मुक्त करने में समर्थ हो सकेगी।"

उपरोक्त प्रश्नों के उत्तर दे देने के बाद पुनः उन्होंने २७ अक्तूबर को कुछ प्रश्न किये थे। उनमें चन्द ये हैं:—

१—क्या R. S. P. अपने को किसानों तथा अन्य शोषितों का प्रतिनिधि नहीं कहती, सिर्फ मजदूरों का ही कहती है ?

२—R. S. P. क्या उसी तरह का प्रजातंत्र-शासन चाहती है जिस प्रकार के शासन की डींग, इस साम्राज्यवादी-युद्ध में, मित्र-राष्ट्र हाँकते हैं ?

३—क्या राष्ट्रीय, सामाजिक तथा आर्थिक क्रान्तियां तीनों एक ही साथ नहीं होगी ?

४—R. S. P. अपने को मजदूरों का ही प्रतिनिधि क्यों कहती है ? स्पष्ट लिखें। हमारी समझ मे अभी ठीक-ठीक नहीं आया।

यूरोपीय और अमेरिकन प्रजातंत्रों के विषय मे अपने विचार उन्होंने इस प्रकार प्रकट किये थे।

"विदेश मे जैसा प्रजातंत्र है, उससे मुझे हार्दिक कष्ट है। उसमें जनता का शोषण बदस्तूर जारी रहता है।"

बाहर क्रियाशील तथा फरारी जीवन में सैद्धान्तिक एवं आदर्शगत विषयो पर गहन अध्ययन अथवा विचार-विनिमय का अवसर उन्हे नहीं मिला था। अतः पार्टी-सम्बन्धी विस्तृत विचारो पर उलझन थी।

एक बार उन्होंने पूछा था:—"महात्मागाँधी ने छूटने के बाद से अब तक जो ब्रिटिश-साम्राज्यवाद से तथा साम्प्रदायिकतावादियों से समझौते की कोशिश की है, उसे पार्टी किस निगाह से देखती है ? क्या अगस्त-विद्रोह के साथ गान्धीजी विश्वासघात नहीं कर रहे है ? पाकिस्तान, सी-आर फार्मूला, और गान्धीजी के संशोधित प्रस्ताव पर पार्टी क्या विचार रखती है ? सप्रमाण, सकारण सभी उत्तर आने चाहिये।"

स्पष्टता के लिये एक बात लिख देना आवश्यक है। सप्ताह में — बार मैं उन्हें पत्र लिखता था और प्रत्येक पत्र मे देश विदेश

की सभी महत्व-पूर्ण खबरें लिखता था। इस प्रकार अपने अन्तिम दिन तक वे सभी परिवर्तनों से परिचित रहे।

२ नवम्बर के अपने पत्र में, जो उन्होंने मुझे लिखा था, उसमें कां० कैलाश पति मिश्र (सहजनवां-ट्रेन-डकैती-षड़यंत्र केस के अन्य तम अभियुक्त) ने कां० राजनारायन के प्रति अपने हृदय के उद्गार यों प्रकट किये थे :—

"कां० राजनारायन का समाचार अवश्य अति ही दुखदायी है। किन्तु इस पथ का यही संवल है। जिसने इसे हस्तगत किया वही सफल हुआ। अतः वे सफल पथिक है। हमारे लिये आदर्श है।"

एक वार मैंने एक नवीन व्यक्ति द्वारा पत्र भेजा। उसने पत्र दिया नहीं। उसके सिलसिले मे लिखते हुये कां० राजनारायन ने लिखा था :—

"... ...कष्ट तो आप को होगा ही। मैं जहां रहा, दूसरों को कष्ट ही देता रहा। अब अन्तिम समय मे आप को कष्ट दे रहा हूँ। आप क्षमा करेंगे।" यह पत्र ६ नवम्बर का है।

न जाने क्यों, इन वाक्यों को पढ़ कर मेरे नेत्रों से आँसुओ की धारा वह चली। मैं जितना ही इन शब्दों को पढ़ता था उतना ही हृदय विह्वल और व्यथित हो रहा था, तथा वह विह्वलता और व्यथा घुल घुल कर पानी के रूप मे नेत्रों की राह बाहर निकल रही थी। इसका समुचित उत्तर मैंने दिया था, "पहले तो ऐसा कष्ट, कष्ट नहीं। दूसरे तुम्हारे विषय में तो उनकी गिनती नहीं।

और अगर कष्ट भी हो तो मुझे तुम्हारे विषयक इस कष्ट के भोगने मे ही आनन्द और प्रसन्नता है। साथी ! प्रिय साथी !! भविष्य में ऐसा लिख कर मुझे व्यथित न करना !"

उन्हें अन्तिम समय मे अपनी धर्म पत्नी को लेकर थोड़ी चिन्ता थी। उसे उन्हीं के शब्दों में रख रहा हूं :—

"मेरी। मुलाकात आई थी। मेरी स्त्री अधिक दुखी थी। घर वाले उन्हे अपने पास रखना नहीं चाहते हैं। ताना मारते हैं। क्या किया जाय ? दूसरी जगह पर रहने का और कोई जरिया नहीं है। मैंने यही सोचा है कि उनकी दूसरी शादी आर्य-समाज के जरिये हो जाय तो अच्छा है। फिर आप जैसी उचित सलाह दें, वही करूँगा। मैं साफ तौर से उनके पास पत्र लिखना चाहता हूं। वे फिर जैसा चाहें करें।"

आपका राजू।

यह पत्र भी ६ नवम्बर का ही है।

इसी सिलसिले मे, मेरी सलाह के बाद, पुनः १६ नवम्बर के पत्र में वे लिखते हैं :—

"मैंने अपनी स्त्री के सामने सभी बातें खोल कर रख दी हैं। उन्हें अपनी ओर से पूर्ण आजादी दे दी है। जो चाहें वह करें पुनर्विवाह करने पर मैंने काफी जोर दिया है, क्योंकि ससुराल वाले भी उन्हें अपने पास नहीं रख रहे हैं। पत्र द्वारा सभी बातें लिख दिया है।

कां० कैलाश उन्हीं दिनो जेल-अधिकारियों के दुर्व्यवहार के

विरुद्ध अनशन कर रहे थे। उसमें हम अधिक परेशान थे। उस विषय में समाचार पाकर, वे (राजनरायन जी) कां० कैलाश की सहानुभूति में उसी पत्र में लिखे थे :—

"अधिकारियों के दुर्व्यवहार का हृदय से घोर विरोध करता हूं। कां० कैलाश के लिये कामना करता हूं कि अधिकारियों को नीचा दिखाने में वे सफल हों। मुझे भी आप आज्ञा दें, मैं भी अनशन प्रारम्भ करूँगा। आप जो भी कदम उठायें, मैं हृदय से सहमत हूं।"

२७ नवम्बर के पत्र में उन्होंने अपने क्रान्तिकारी विचार यों प्रकट किये थे :—

"हमें ऐसा उपाय करना चाहिये कि प्रतिक्रियावादी हमारे बलिदान का प्रयोग न कर सकें। मेरे क्रान्तिकारी विचार मेरे जिले वालों से छिपे नहीं हैं। मैंने कई बार लोगों को स्पष्ट करके समझाया है। कुँअर जी से भी मैंने अपने विचार कई बार जाहिर किये हैं।.......

........परन्तु जो लोग त्याग और तपस्या की ओर ध्यान देते हैं, वे ही R. S. P. में शरीक होते हैं। हमें वह दस आदमी ही चाहिये जो त्यागी हैं, अपने जान की बाजी देश की खातिर लगा सके। वे कई सौ आदमी नहीं चाहिये जो लम्बी चौड़ी हांकते हों, जो अवसरवादी हुआ करते हैं। हमें वे नौजवान देश के अन्दर से चुनकर लेने हैं, जो चाकू के नोंक की भांति अपने को शोषित

वर्गों के आगे रखते हैं, जो किसान मजदूरों का कष्ट निवारण कर सकें—तथा जिनका पेशा ही क्रान्ति करना हो।"

आपका—राजू

उसी पत्र मे उन्होने अपने भाई के विषय मे अपने उद्गार यों प्रकट किये थे :—

"जिन भाई की बदौलत आज मैं इस सौभाग्य को प्राप्त कर सका हूं, जो सराहनीय हैं, उनका नाम बाबूराम चोटइया वाले है। हमारे जिले मे हर एक किसान-बच्चा इस नाम से परिचित है। वे आजकल लखनऊ सेन्ट्रल जेल मे ३८ साल की सजा काट रहे हैं। यह सजा मेरे ही केस में हुई है। केस चलने के बाद से अब तक उन्होंने किसी से भेंट नहीं की है। उन्हीं को साल मे तीन माह की तनहाई की सजा मिली है। जब से सेन्ट्रल जेल गये हैं अभी तक तनहाई में ही हैं। उन्होंने अभी तक न बाल बनवाये हैं न स्नान ही किया है। मुझसे भी नहीं मिले। मुझे और साथियों के जरिये आशीर्वाद भेजा है। मां का दूध न लजाने को कहा है।"

कल दूसरी दिसम्बर थी। संध्या को नित्य की भांति मैं गार्डेनिंग करने जा रहा था कि समाचार मिला, प्रिवी-कौंसिल से राजू की अपील खारिज हो गई। आशा इसके विपरीत कभी न थी परन्तु फिर भी जी सन्न हो गया। आँखों में आँसू छलछला आये। हृदय रो उठा। थोड़ी देर के बाद ही उस भावी शहीद का पत्र आया :—

"प्रिय भाई साहब ! नमस्कार,

आज हमारी अपील खारिज हो गई है। आप लोगों का सन्देशा लेकर अमर शहीदों के पास शुक्रवार के दिन जा रहा हूँ। यह मेरा अन्तिम पत्र है। आप जेलर साहब से मुलाकात के लिये कहना। यदि अन्तिम समय में आप के दर्शन हो सके तो अच्छा ही है। देश के नारे लगाते हुये जाऊँगा। सभी को नमस्कार।

आपका—राजू।

आज तीसरी दिसम्बर है। कां० कैलाश का पत्र आया है। उन्होंने कां० राजनारायन के विषय में लिखा है :—

"सुना है कां० राजनारायन की अपील खारिज कर दी गई। शुक्रवार उनका अन्तिम दिन है। देखें ! भारत स्वतंत्र होते होते हमें इस घृणित साम्राज्यवादी मनोवृत्ति को ऐसे और कितने क्रान्तिकारी युवकों की भेंट देनी पड़ती है !!!"

❀ ❀ ❀

आज योगेश बाबू के बोलाने पर जेलर साहब हमारी बैरक में आये। उनसे कहा गया—"फांसी गारद में एक राजनीतिकबन्दी राजनारायन है। उसको फांसी तो हो ही रही है, हम उसका अन्तिम दर्शन करना चाहते हैं। जेलर साहब ने सहर्ष स्वीकार कर लिया। और प्रबन्ध कर दिया कि हम तीन २ चार २ के समूह मे तीन दिन के भीतर मिल लें। हमें अपार आनन्द हुआ। हमें आशा नहीं थी कि इतनी शीघ्रता से यह बात स्वीकृत हो जावेगी। मैं दो

तीन दिन से गम्भीरता पूर्वक सोच रहा था कि कौन-सा उपाय करूँ जिससे उस क्रान्तिकारी शहीद के अन्तिम दर्शन हो सके। बड़े जमादार को घूस देना, फाटक खोल कर जबर्दस्ती चले जाना, अकेले चले जाना आदि अनेक सम्भव और असम्भव उपायों को सोचा करता था। बस यही लालसा थी—एक बार उसे देख लूं। उसका दर्शन हो जाय। खैर, कामना पूर्ण हो गई। जी हलका हो गया। मानो बोझ सर से उतर गया।

उपरोक्त प्रबन्धानुसार आज ४॥ बजे सर्व श्री चौ० बदन सिंह M. L. A., सी० बी० शुक्ला बी० ए० LL. B. और सूरजनाथ पाण्डे गये और उस क्रान्तिकारी शहीद के दर्शन किये। आने के बाद चौधरी साहब के तुरत के उद्गार ये थे :—'भाई, जब तक हम रहे वह मुस्कराता ही रहा। गजब का बहादुर है। हम सब इकट्ठे हो गये। बहुतों की आँखों में आँसू भर-भर आ रहे थे। पाण्डे जी ने कहा, 'भाई, मैं तो इतना द्रवित हो गया कि मानों काठ मार गया है। एक शब्द भी मुंह से नहीं निकल रहा था। उन्हीं का मुँह देख रहा था और उन्हीं की बात सुन रहा था। मानो इन्द्रियां स्तब्ध हो रही थीं। बहुत ही बहादुर युवक है। अत्यन्त मस्ती की अदा है।

इस प्रकार उस क्रान्तिकारी ने हमारे हृदयों को जाते-जाते भी मोहित कर लिया।

❀ ❀ ❀ ❀

आज ही उनके जिले के दो सज्जन, जो कांग्रेस जन थे, मिलने आये थे। उनको मुलाकात करने के लिये आते और मिल कर वापिस जाते मैंने देखा था। मैं आज दो बजे से ही घेरे के गेट पर खड़ा था। किसी काम मे जी लग ही नहीं रहा था।

५-१२-४४

❀ ❀ ❀ ❀

आज डॉ० राजनरायन का सम्भवतः अन्तिम पत्र आया। उसमे श्री माखन लाल मिश्र, अपने भाई बाबू राम चोटइया वाले, अपनी पार्टी R. S. P. देश के किसानो (विशेष कर अपने जिले के किसानो) के नाम उस शहीद के अन्तिम शब्द और सन्देश थे। वे सभी मैं एक २ कर उसी के शब्दों मे दे रहा हूँ।

श्री माखन लाल मिश्रा के नाम :—

"प्रिय भइया माखन !

हम सदा साथ रहे। परन्तु अन्तिम समय मे मैं आप को छोड़े जा रहा हूं। इसलिये मैं जो कार्य अधूरा छोड़े जा रहा हूं, उसे आप पूरा करें। अपने जीवन-उद्देश्य को कभी मत भूलना-मेरा अंतिम सन्देश है। मुझे पाना मेरे जीवन के उद्देश्य की पूर्ति करना है। मैं जा थोड़े ही रहा हूँ—मेरी आत्मा सदा आप के पास ही कदम २ पर चलेगी।

यदि किसी कारण वश आपके विचारो मे परिवर्तन हुआ हो तो कोई बात नहीं है। साथी ! मैं अन्तिम समय में क्या लिखूं ? आप जिन विचारो को लेकर पहले चले थे, उन्हीं को

लेकर जीवन पर्यन्त चलें। संख्या की तरफ ध्यान नहीं देना चाहिये। थोड़े मजे हुये सिपाही अच्छे होते हैं बनिस्वत अधिक के। मेरा हमेशा, और अन्तिम समय में भी पूर्ण विश्वास है सशस्त्र क्रान्ति में। वर्ग-हीन समाज के हाथों में देश की शासन—सत्ता आवे—हमारी समाधि से यही सदायें निकलेंगी।

साथी योगेश बाबू (दादा जी) को कभी मत भूलना।

अन्तिम क्षमा !! अन्तिम विदा !!!

तुम्हारा जीवन साथी

सशस्त्र क्रान्ति—जिन्दाबाद

वर्गहीन समाज—जिन्दाबाद

इन्कलाब जिन्दाबाद"

श्री बाबूराम चोटइया वाले के नाम :—

"श्री भाई साहब !

'आज मैं आप को अब अन्तिम पत्र लिख रहा हूं। आज हमें यह सौभाग्य आप के ही आशीर्वाद से मिल रहा है। हमारा यही सदा जीवन—उद्देश्य रहा—किसान और मजदूर सुखी रहे। शासन—सत्ता उन्हीं के हाथ मे आये। आज मैं आप से विदा हो रहा हूँ। परन्तु हमारे उद्देश्य की पूर्ति करना हमे पाना है। हम क्रान्तिकारी—सोशलिस्ट—पार्टी मे हमेशा रहे। उसी पेड के नीचे पनपे थे। मेरी अन्तिम प्रार्थना आप से है आप भी इसी मे शरीक होकर, देश को क्रान्ति को, फली भूत करें।

मेरी समाधि भी बनवाना। वहा से आप को हृदय से सुनने

मे, इन्कलाब—जिन्दाबाद, सशस्त्र क्रान्ति—जिन्दाबाद, यही सदाये आवेंगी। आप चिन्ता न करें। आप तो कहते थे, मेरा छोटा भाई जिस दिन देश की खातिर बलिवेदी पर चढ़ेगा, उस दिन को सौभाग्य समझूंगा। आप के चरणों के आशीर्वाद से मैं हँसते २ जा रहा हूँ। सदा हँसते रहे अन्तिम समय मे भी हँसते ही आवेंगे। अन्तिम क्षमा !! अन्तिम विदा !!!

आप का छोटा भाई

राजनारायन"

"R. S. P. के नाम संदेश

पार्टी के जितने सदस्य हैं वे सभी साथी चाकू की नोक की भांति किसान, मजदूर के हृदय में घुस कर उन्हें जीवन उद्देश्य के मार्ग पर लावें। अभी तक R. S. P. चन्द शहरों मे ही है। हमे देश के ७ लाख गावों मे जाकर पार्टी के उद्देश्य, शासन का प्रचार करें। हमेशा चाकू के नोक की भांति क्रान्ति मे अगुआ रहें। आशा है हमारा परिवार हमारे बलिदान से विकसित होगा !! अन्तिम विदा !!!"

"जिले के किसानों के नाम संदेश

देश के प्रत्येक नौजवान का जीवन—उद्देश्य यही है, कि वह अपने देश की आजादी लेने मे अपने को खपा दे। आज मैं आप सभी दुखी भाइयों से विदा हो रहा हूँ। अन्तिम सन्देश, हृदय से मेरा यही है—आप सभी लोग धन, जीवन से सशस्त्र क्रान्ति मे भाग लें। ब्रिटिश—साम्राज्य वाद के साथ ही जमींदारों

ताल्लुकेदारों, देशी—रियासतो और पूंजीपतियो को खतम कर देना। किसान—मजदूर मिल कर क्रान्ति करना ताकि वर्ग—हीन समाज के हाथो मे शासन—सत्ता रहे!

अन्तिम विदा !! पंचायती हिन्दोस्तान—जिन्दाबाद"

प्यारे राजू का अन्तिम पत्र मेरे नाम निम्न प्रकार है :—

"मैं ऐसी घड़ी मे पैदा नहीं हुआ हूँ कि किसी प्रकार की चिन्ता करूं। मेरा तो यह सौभाग्य है, मैं आज देश की खातिर बलिवेदी पर चढ़ रहा हूँ। हमेशा हँसते रहे। आप सभी साथियों के त्याग की वजह से अन्त में भी हँसते ही जाऊगा। मेरे न रहने के बाद आप जहा भी मेरी समाधि स्थापित करेंगे। हृदय से वहां पर सुनने मे इन्कलाब—जिन्दाबाद' की सदायें आयेंगी।

अन्तिम विदा !! साथी"

आज उनकी भाभिया और एक भतीजा मिलने आया था। हम फाटक पर देखते रहे। आज हमारी मिलाई न हो सकी। ५।। बज चुका था। देर हो गई थी। ६-११-४४

❀ ❀ ❀

आज प्रातः काल से ही हम चिन्तित थे कि कहीं आज न चूक जाय। दादा जी के जिम्मे किया गया था कि वे सबेरे ही जेलर साहब से इस मुलाकात के लिये स्मरण करा दें, लिख कर भी जेलर साहब से कहा गया था। अन्ततः दस बजे तीन जने सर्व श्री जय बहादुर सिंह, कैलाश पति गुप्ता तथा जगत मोहन—दर्शन करने गये। प्रायः १५ मिनट वे लोग रहे। आने के साथ

हीं श्री जय बहादुर सिंह ने "Very brave, exceptionally spirited" शब्दों से अपने उद्‌गार प्रकट किये । श्री कैलाश पति गुप्त ने तो अपने हाव भाव से उक्त उद्‌गार का समर्थन मूक भाषा में ही किया ।

उसके पश्चात् हम चार व्यक्ति—योगेश चन्द्र चटर्जी, गोबर्धन सिंह, शिव्यन लाल सक्सेना और मैं—गये । हृदय में उथल-पुथल हो रहा था । पांव सीधे न पड़ते थे । भावों के उतार चढ़ाव तेजी से हो रहे थे । कौन विचार कहां से प्रारम्भ होते कहां समाप्त होते, कुछ पता नहीं । सब अपने २ विचार-सागर में डूबे चले जा रहे थे । धीरे २ चल कर हम वहां पहुँचे । उसनेदूर से ही हमें देख कर, हंसते हुए नमस्कार किया । हम जा कर कोठरी के सामने बरामदे में बैठ गये । वे अपनी कोठरी में पास ही बैठे थे । केवल तीन चार छड़ों का अन्तर हमारे मध्य था । मैं प्रायः चुप था । केवल उस अमर शहीद का मुंह देख रहा था । और उसके आंतरिक भावों के अध्ययन की चेष्टा कर रहा था । लम्बा छरहरा युवक, गेहुआं रंग, अधखुली आंखें, पतली मूंछें, चौड़ी छाती, बन्दी के एकलाड़े कुरते और जांघिये में—भारतीय—क्रान्तिकारी आन्दोलन का प्रतीक हमारे सामने बैठा था । उनकी स्त्री, बच्चे, घर की आर्थिक सहायता उनके जिले के कांग्रेस-जनों की साधारण उदासीनता आदि विषयों पर बातें होती रहीं । वे इतने प्रसन्न थे, इतना मुस्कुराते थे जो बीच २ में वृहद् हँसी के रूप में खिलखिला पड़ती थी । हमें स्वयं ढाढ़स बंधाते थे कि

हमारी सबकी उदासीनता क्षण भर के लिये काफ़ूर हो गई। परन्तु वह क्षणिक ही थी। बात चीत के मध्य सशस्त्र-जन-क्रान्ति में उन्होंने बार-बार अपना अटल विश्वास प्रकट किया था। घरेलू मामले में हम उन्हें जबर्दस्ती ही खींच लेते थे। उन्होंने स्पष्ट बताया।

"मैं रिव्यूशनरी सोशलिस्ट-पार्टी का सदस्य था, अतः जिले के धनी मानी कांग्रेसजन केस की पैरवी भी न किये, और अन्त समय कोई विशेष लोग मिलने भी न आये।" उन्होंने अपनी अन्तिम इच्छा और अपने अन्तिम उद्गार यों प्रकट किये:—"मेरी हार्दिक कामना यही है कि देश का शासन-सत्ता किसान-मजदूरों के हाथ में जाय।" उनकी स्त्री-बच्चों को वर्धा-आश्रम भेजने के हमारे प्रस्ताव पर उन्होंने यह कह कर 'कि हम सशस्त्र-क्रान्ति में विश्वास करते हैं। हम गान्धी जी के आश्रम में अपनी स्त्री और बच्चों को कैसे जाने के लिये कहें?' विरोध किया। परन्तु मेरे आग्रह पर वे राजी हो गये। हमने तर्क किया कि वहाँ प्रारम्भिक शिक्षा हो जायगी। पुनः बाहर निकलने पर हम उनकी देखभाल करेंगे। जब तक हम रहे वे सदा हँसते ही रहे। ४४ घंटे बाद की निश्चित मृत्यु की तनिक भी छाया उसके मुख मण्डल पर नहीं थी। उसका खिलखिला पड़ना हमारे साधारण मनोवैज्ञानिक विश्लेषण को व्यर्थ बना रहा था। बीच बीच में हम लोग द्रवित हो गये। आँखें भर आईं। प्रायः आध घंटे तक हमारी मुलाकात होती रही। दादा जी के प्रति उन्होंने कहा—'दादा जी आप ही के त्याग और

तपस्या को आदर्श मानकर तो हम चले थे। आप से तो हम सदा जीवनी-शक्ति ग्रहण करते रहे।' दादा जी के सूखे जीवन में भी आर्द्रता आ गई। नेत्र भर आये। उनका गला भर गया। उन्होंने भर्राये गले से कहा—'हम क्या कहें? न जाने कितने साथी बङ्गाल से लेकर पञ्जाब तक एक-एक करके शहीद हो गये। मेरे जीवन में यही देखना बदा है--नहीं तो मैं भी कभी का चल बसा होता !! मुझसे तो कुछ नहीं कहा जाता।'

वहां से चलते समय हमने हाथ मिलाये, नमस्कार किये और मैंने उस भावी शहीद पर दो फूल चढ़ाये तथा उन्हें अपने शिर आंखों में लगा कर जतन से उन्हें अपने पास रख लिये। स्पष्ट ही चलते समय हम अपने को संभाल न सके। हमारे इस भाव को उन्होंने स्पष्ट देख लिया और ढाढस बंधाया—आप लोग दुखित न हों, हँसते २ आप लोग जांय—मैं तो हँसते २ ही जा रहा हूं।" जब तक वह सुख-छवि दिखाई पड़ी मैं घूम २ कर देखता रहा। भारी हृदय लेकर हम लौटे।

उसके बाद उनकी अन्त्येष्टि क्रिया, और उनकी जीवनी के प्रकाशनके सम्बन्ध में परामर्श किया गया।

दोपहर बाद सेन्ट्रल जेल से उनके गांव के लोग मिलने आये थे। मिलकर जाते समय उन्होंने, "खूब हंस रहे थे," कह कर अपने अन्तिम उद्गार प्रकट किये।

उसके बाद दो तीन कांग्रेस जन और उनके घर एवं गांव की अनेक स्त्रियां मिलीं। उसके लिये राजनारायन को फांसी

-गारद से निकाल कर जाली में (जहां साधारण मुलाकात होती है) ले जाया गया। वहां वे सबसे मिले। उनकी स्त्री और दोनों बच्चे भी वहां थे।

रात मे एक जमादार ने आकर पूछा—राजनारायन ने पूछा है कि खद्दर की कमीज और खद्दर की जांघिया नई मिल सकती है ? सोचकर उन्हे कहवा दिया गया कि हां, मिल सकती है। वे जेलर साहब से कहें। हम लोग भी कहेगे। ७-११-४४

❀ ❀ ❀

आज प्रातःकाल से जी नहीं लग रहा था। राजनारायण का अन्तिम समय निकट आता जा रहा था। दादा जी ने जेलर को लिखा था कि हम राजनारायन को एक खद्दर की कमीज तथा जांघिया देना चाहते हैं ताकि उसी पोशाक मे वे बलिवेदी पर चढे। ऐसी उनकी इच्छा थी। यह प्रार्थना जेलर साहब ने स्वीकृत कर लिया था, परन्तु स्वीकृति की सूचना हमे ८ बजे रात के पहले न मालूम हो सकी। अस्तु-दो बजे से ही आज भी मैं अपने बैरक-घेरे के फाटक पर जा बैठा। कुछ आशा थी कि सम्भवत: घर-गाव वालों से मुलाकात के लिये आज भी वह भावी शहीद जाली मे जाय तो उसका अन्तिम दर्शन हो जाय मनोकामना पूर्ण हो गई। लगभग ३।। बजे के वह बिना हथकड़ी के (???) फासी गारद के बाहर निकले। फांसी-गारद से मृत्यु-दण्ड प्राप्त बन्दी को निकालना—मुलाकात के लिये अनोखी चीज थी। जेल-इतिहास मे ऐसा काम कभी नहीं हुआ था।

और वह भी विना हथकड़ी के !!! हद हो गई। सारा जेल-स्टाफ, जेल के बन्दी मुँह मे उंगली दवाये देख रहे थे। किसी को आंखो पर विश्वास नहीं हो रहा था। फांसी का बन्दी-भयानक बागी राजवन्दी-कोठरी से निकाल कर जाली में २०-२५ आदमियों से मुलाकात-विना हथकड़ी के निकाला जाना आदि २ बातें जेल-इतिहास मे अपवाद थीं !!! ये सब वर्तमान जेलर की अत्यन्त करुणा-पूर्ण, दया-युक्त, मानवोचित सज्जनतामय भावनाओं का परिणाम थी। इतना ही नहीं। हर एक आदमी जिसने उस भावी शहीद से मिलने की इच्छा प्रकट की—उसे मिलाया गया। जेल-भर के सभी राजवन्दी, तीन चार 'वी' क्लास के अराजनीतिक बन्दी सभी उस क्रान्तिकारी युवक के अन्तिम दर्शन कर सके। यह सब जेलर साहब की असीम दयालुता, मानवता-पूर्ण भावना और हमदर्दी के कारण सम्भव हो सका। जेलर साहब ने हम राज बन्दियों के हृदय पर सदा के लिए चिर-स्थायी स्थान बना लिया। उनके इस ऋण से हम यहां के राजवन्दी कभी उऋण नहीं हो सकते। अस्तु, दादा जी और मैं फाटक पर ही थे। हमने नमस्कार के स्वरूप में अपनी आन्तरिक श्रद्धा के अन्तिम फूल चढ़ाये। वह हमें देख मारे प्रसन्नता और मस्ती के उछल पड़े और नमस्कार रूप में प्रत्युत्तर दिया। कहा—और लोगों को बुलवाइये। मैं दौड़ा गया। सब लोग दौड़ते हुये आये। तब तक फाटक के भीतर वे चले गये थे। हम खड़े बाट जोहते रहे कि वापस आते समय दर्शन हो जायेगा हम सोच रहे थे

और उसी अनुसार बातचीत भी कर रहे थे—इतनी मस्ती, इतनी प्रसन्नता, इतना उत्साह, इतनी खुशी, इतना आह्लाद, इतना साहस. मरने मे इतनी जल्द बाजी—यह सब भारतीय क्रान्तिकारी की अपनी विरासत है। चिन्ता, परेशानी, भय आदि का नामोनिशान नहीं। उन्हें अपने कामों से पूर्ण सन्तोष था। उन्हें अपने लक्ष्य और साधन में पूर्ण विश्वास था, जो वे अन्त तक निस्संकोच भाव से प्रकट करते रहे। उनका विचार था कि मैंने अपना कर्तव्य, अपने विश्वास के अनुसार, अपने पथ से चलकर, पूरा किया। इसी सबका उन्हें पूर्ण सन्तोष था। उस सन्तोष का प्रतिबिम्ब स्पष्टतया उनके हावभाव प्रत्येक शब्द, हर एक मुस्कान और खिलखिलाहट मे भी था। इतनी मस्ती, इतनी अदा, इतनी मृत्यु से लापरवाही, इतना भोलापन पहले क्रान्तिकारियो की जीवनियो और शहीदों की पोथियो में पढी थी--परन्तु आज जीवन मे प्रथम बार साक्षात देखने को मिली! आज जीवन धन्य था!! कल्पना भी आज वस्तु सत्य हो गई!! हम आज अपने में नहीं थे। इस आदर्श क्रान्तिकारी शहीद ने हमारे जीवन पर एक अमिट छाप छोड़ दी,। हम सब उसके सामने बौने से जान पड़ते थे।

थोड़ी देर बाद वे लौटे। हम सब फाटक से निकल कर सामने आगये। सबके श्रद्धा के पुष्प रूपी हाथ ऊपर उठ गये। उसने भी प्रत्युत्तर में हांथ ऊपर उठाये और कहा—"हँसते हँसते नारे लगाते जायेंगे।" और मस्ती की अदा से अपनी चिर-संगिनी

चाल-कोठरी की ओर स्थिर गति से चल पड़ा। हम चित्र-लिखे से उसकी ओर देखते रहे--जब तक देख सके।

तब से लेकर बैरक बन्द होने तक विचित्र प्रकार से वही बातचीत होती रही। हम सोच रहे थे हर एक घंटे का बजना, उसके लिये मृत्यु-घंटा है। प्रत्येक मिनट उसे निश्चित-मृत्यु की ओर घसीटे ले जारहा है।

रात में बड़े जमादार अब्दुल समद आये। कहा—राज-नारायन ने कमीज और जाँघिया माँगी है। जेलर साहब ने आज्ञा दे दी है। हमने जांघिया कमीज दे दी।

प्रायः दस बजे जेलरसाहब स्वयं आये। कहा—मैं फांसी-गारद राजनारायन के पास गया था, यह पूछने के लिये कि और किसी चीज़ की जरूरत हो तो मैं सब पूरी करूं। राजनारायन ने अपनी लाश को राजबन्दियो द्वारा उतरवाना पसन्द किया और जेल साहब ने वचन दिया है कि ऐसा ही होगा। हम सभी ने हार्दिक धन्यवाद और प्रेम प्रकट किया—जेलर साहब के इस बर्ताव पर। हमारा रोम रोम गद्गद् और विह्वल था। उन्होंने बताया कि लाश को ले जाने के लिये त्रिलोकी सिंह को लिखित आज्ञा, सुपरिटेंडेंट ने दे दिया था। इसका पता लगने पर जिला मजिस्ट्रेट ने मना कर दिया। साहब बड़े असमंजस में पड़े। तब सुपरिटेंडेंट ने जिला मजिस्ट्रेट से फोन पर बातचीत की। परन्तु कुछ निश्चय नहीं हो सका। अन्त में सुपरिटेंडेंट की सलाह से त्रिलोकी सिंह मजिस्ट्रेट से मिले और अन्ततः तै हो गया। लाश

बाहर के सम्बन्धियों और राष्ट्रीय-कार्यकर्ताओं को मिल जायगी।

जेलर साहब ने एक काम और किया था। मुलाकात के समय जाली में राजनारायन की स्त्री विद्यावती को भी उनके बच्चों के साथ ले गये। वहा हाथ पर हाथ रखकर सभी धार्मिक कृत्य (गोदान, स्वर्णदान, तुलसीदल) कराये। पूरे समय तक वे वहां उपस्थित रहे। जेल-जीवन में एक बन्दी—वह भी मृत्यु-दंड प्राप्त-के लिये इतनी सुविधा आशातीत थी। हम लोग स्वप्न में भी आशा नहीं किये थे कि
इतना कभी भी हो सकता है।

कॉ० कैलाश भी उस शहीद के अन्तिम दर्शन दो बार कर आये। एक ७ ता० को अकेला, तथा दूसरा आज तनहाई के सभी लोगों के साथ। उन्होंने अपने अन्तिम भावों को यों लिखा है:—

"मैंने भी उस अमर शहीद के अन्तिम दर्शन का सौभाग्य प्राप्त किया।"

दूसरे पत्र में उन्होंने यों लिखा है:—

"मैंने अपने महान्. सफल साथी कॉ० राजनारायन से मिल कर आया था। उनके विकसित चेहरे के मूक भाषार्थ को समझने की विफल चेष्टा करता जा रहा था। उस अमर शहीद के प्रति अन्तर-तल में एक भूचाल-सा उथल-पुथल हो रहा था "

८-११-४४

❀ ❀

रात सायँ सायँ करती अनन्त की ओर भागी चली जा रही है। रात्रि की निस्तब्धता यदा कदा घड़ी लगाने वाले जमादारों के जूतों के शब्द अथवा एकाध बेतुकी गाने की कड़ियों से भङ्ग हो जाती है। आज के अन्धकार का घनत्व अधिक जान पड़ता है। घंटे भी कुछ जल्दी जल्दी बजते सुनाई देते हैं। ९-१०-११ ... बारह · टन् टन् , टन् !!! अब केवल ६॥ घण्टे और ! और राजू हमसे सदा के लिये छीन लिया जायगा। अर्द्ध रात्रि के पश्चात् १९ दिसम्बर को हो गया। आज ही ६ बजे यह क्रान्तिकारी राजनारायण अमर शहीद हो जायेगा। उसका हास्य पूर्ण-मुखमण्डल नेत्रों के सम्मुख प्रतिमा धारणकर उपस्थित है। उसकी मस्ती और लुभावनी अदा हृदय में एक टीस और कसक उत्पन्न किये है। एक-एक सेकन्ड जीवन-डोर को कम ही करता जा रहा है—वह भी निश्चित एवं सुयोजित गति से।

१ बज गया। केवल ५ घण्टे शेष हैं। निस्तब्ध रात्रि अविराम गति से गतिशील है !!!

राजनारायन को इतना सन्तोष क्यों था ? उनके विचार इतने उन्नत, दृढ़ और स्थिर क्यों थे ?

दो बज गया। अब अन्तिम क्षण के चार घण्टे और शेष बच गये। रात सन्नाटे से भागी चली जा रही है।

३ का घंटा घन्न, घन्न, घन्न, कर बजा ! अब केवल ३ घंटे शेष रहे ! रात्रि भी अपने अन्त की ओर ही—मानों राजनायन के अन्त की कल्पना से सिहर कर–भाग रही है। उसे विश्वास

है; स्यात् मुझे अपनी गोद में राजनारायन का अन्त न निरखना पड़े हाय रे दुर्दैव, दुर्विपाक!!! अन्तिम क्षण के तीन घंटे पहले मैंने अपनी अन्तिम श्रद्धांजलि एक पत्र रूप में भेजा—वह मेरा आखिरी पत्र था। उसे पढ़ कर उन्होंने कहा—उत्तर क्या देना है? हम हँसते हँसते और नारे लगाते जावेंगे। वह पत्र अविकल नीचे दिया जाता है—

प्राण प्रिय जीवन साथी।

तुम जा रहे हो! जाओ!! किस मुख से तुमसे न जाने को कहूँ??? बन्धु जाओ!! हँसते-हँसते जाओ!!! तुम्हारी याद में रोते २ भी हम हँसते रहेंगे!

तुम्हारे बलिदान के अवसर पर एक बार पुनः हम दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं—तुम्हारे दिखाये पथ पर, तुम्हारे सम्बल से, अविराम गति हम चलते रहेंगे। अनेकों राजनारायन हमारे बीच इस बलिदान के फल स्वरूप उत्पन्न होंगे।

हम जीवन पर्यन्त किसान-मजदूर राज्य की स्थापना के लिये सचेष्ट रहेंगे—यह हमारी प्रतिज्ञा है, तुम्हारे समक्ष है।

जिस साधन को तुमने अपने लक्ष्य-प्राप्ति के लिये अपनाया—वही हमारा साधन सदा रहेगा।

तुम्हारी याद हमें सदा अनुप्राणित करती रहेगी!! जाओ! साथी! जाओ!! मित्र! जाओ!! बन्धु! हँसते २ जाओ!!!

विदा! अन्तिम विदा!! पार्थिव रूप से सदा के लिये विदा!!! कछेक घंटे और शेष रह गये हैं!! सतार याद, स्मृतमप

में तुम दूसरी दुनिया के हो जाओगे ! अमर शहीद ! वीर साथी अन्तिम बार पुनः एक बार हम तुम्हारे चरणों में अपनी श्रद्धा के फूल अर्पित करते हैं !!!

विदा ! अलविदा !! अन्तिम विदा !!!

इन्कलाब—जिन्दाबाद

पचायती हिन्दोस्तान—जिन्दाबाद

क्रान्तिकारी शहीद—जिन्दाबाद

रिवोल्यूशनरी-सोशलिस्ट-पार्टी—जिन्दाबाद

R S P—जिन्दाबाद

अंग्रेजी साम्राज्यवाद नाश हो

चार का घंटा भी बज गया ! आह ! प्यारे राजू के बलिदान के अब कठिनता से दो घंटे शेष रह गये हैं !! रात्रि नितान्त स्तब्ध है !! आकाश में बादल भी आ गये हैं ! अंधियारा और घना हो गया है !

टन्-टन् कर पांच बजे । एक घंटा और ! और पार्थिव-रूप में सदा के लिये साथी राजनारायन हमसे बरबस छीन लिया जावेगा। इतनी जल्दी-जल्दी आज घंटे क्यों बज रहे हैं ? उनके जीवन की डोर भी क्षीण से क्षीणतर होती जा रही है ।

इसी प्रकार ६ बज गया । मैं कुछेक क्षण को छोड़ कर सारी रात बैठा ही रहा । ६ बजते ही हम सभी बैरक न० अठगड़े के पास आकर खड़े हो गये । सभी चुप थे ! सभी अपनी-अपनी भाव लहरों में थपेड़े खाते बह चले जा रहे थे । सेन्ट्रल-जेल,

जेल और कैम्प-जेल के राजवन्दियों के राष्ट्रीय और क्रान्तिकारी नारे सुनात्र पड़ने लगे। रह-रह कर, राजनारायन-जिन्दाबाद" के नारे लगते थे सेकन्ड और मिनट करके ,आधा घंटा हो गया—जेल के घड़ियाल ,ने टन् करके 'अद्धा' वजा दिया। अब हम सांस रोक कर कान लगा छड़ के पास सट गये—उस चिर-विदा होते साथी के अन्तिम शब्द सुनने के लिये। एक ही दो मिनट व्यतीत हुए होंगे कि सभी नारों से अलग गरजती आवाज में साथी राजनारायन की आवाज सुनाई दी। वे नारे लगाते निकले—"इन्कलाब - जिन्दाबाद पंचायती हिन्दोस्तान-जिन्दाबाद, रिवोल्यूशनरी-सोशलिस्ट-पार्टी-जिन्दाबाद, अंगरेजी साम्राज्यवाद का नाश हो !!! क्षीण से क्षीणतर होती आवाज सुनाई पड़ती रही ज्यों २ वे बलि-स्थान की ओर बढ़ते गये, उनके नारे भी विलीन होते गये। एक दो मिनट के बाद ही हमें कुछ न सुनाई पड़ने लगा। केवल उनके भूत नारों की ध्वनि हमारे कानों में गूजती रही और रह गई केवल कल्पना।

फिर तो वही तख्ता, कंटोप, रस्सी, जल्लाद, खटका और सब समाप्त। मृत देह अधर में झूल गई। स्वतंत्र हिन्दोस्तान और अंगरेजी साम्राज्यवाद के बीच एक और क्रान्तिकारी शहीद की लाश झूलने लगी !

साथी राजनारायन ने फांसी-कोठरी से निकल कर (फांसी) गदर के आंगन में सर्व-प्रथम एक गाना गाया था। उसके बाद

नारे लगाये। तथा नारे ही लगाते मस्ती की अदा से फांसी के तख्ते को चूमने चल दिये। खटके खिचने तक वे उपरोक्त नारे लगाते रहे। नारा भी तभी बन्द हुआ जब शरीर निर्जीव हो झूल गया।

सभी जेल-अधिकारी मुग्ध थे उसकी मस्ती और वीरता-पूर्ण व्यवहार को देख कर। सभी ने एक स्वर, से कहा, एक क्षण के लिये भी उस बहादुर के चेहरे पर शिकन न आई। इस प्रकार साथी राजनारायन सब के हृदयों पर एक अमिट छाप छोड़ सदा के लिये चले गये।

❀ ❀ ❀

उस दिन सभी राजबन्दियों ने २४ घंटे का व्रत रखा। मैं तो खोया-खोया-सा घूमता रहता था अथवा सोने की चेष्टा करता था। स्वप्न मे भी वे ही दृश्य दिखाई पडते थे। संध्या-समय हमारे बैरक मे शोक-सभा हुई। दादाजी सभापति के आसन पर विराजमान थे। जीवित-शहीद मृत-शहीद की याद मना रहा था। बन्देमातरम् गान, झण्डा-प्रार्थना, अन्तर्राष्ट्रीय-गान गीता-आदर्श, प्रस्ताव और सभापति का भाषण जीवनी और नारे-ये हमारे यहां के प्रोग्राम थे। उसी समय सेन्ट्रल-जेल तथा जिला-जेल के और राजबन्दियों ने भी शोक-सभायें कीं। मैंने प्रस्ताव पढा और वह १ मिनट तक चुपचाप खड़े हो कर पास हुआ। उसके बाद दादाजी का मर्म-स्पर्शी भाषण हुआ। प्रस्ताव निम्न प्रकार था:—

"हम सब लखनऊ-जिला-जेल के 'बी' क्लास ..

यह सभा आज अपने देश के होनहार वीर-नवयुवक क्रान्तिकारी का० राजनारायन मिश्र की फाँसी से अत्यन्त क्षुब्ध और गौरवान्वित है। वीर राजनारायन ने अपने नन्हें-से जीवन में जिस वीरता और त्याग का परिचय दिया है, और जिस हिम्मत और बहादुरी के साथ फाँसी के तख्ते पर से हँसते-हँसते झूल कर मातृ-भूमि की बलिवेदी पर अपनी *आत्माहुति दी है*, उससे उस वीर-आत्मा ने देश के सभी नवयुवकों के सामने ज्वलन्त देशभक्ति का एक महान् आदर्श उपस्थित कर दिया है।

हम सब लोग उस दिवंगत-आत्मा की शान्ति के लिये प्रार्थना और उस वीर परिवार के साथ हार्दिक समवेदना प्रकट करते हैं।"

अन्त में अन्य क्रान्तिकारी वीरों के मध्य "राजनारायन—जिन्दाबाद" के नारे बारबार लगा कर सभा की कार्रवाई समाप्त की गई।

❀ ❀ ❀

का० कैलाश पति मिश्र ने *जिला जेल लखनऊ की तनहाई की कोठरियों में रखे गये राजबन्दियों की शोक सभा की कार्यवाही-रिपोर्ट निम्न प्रकार भेजी थी —*

"आज (ता० ६ दिसम्बर शनिवार को) बैरक नं० ७ के सब राजबन्दियों की यह सभा अपने स्वर्गीय श्रद्धेय अमर शहीद का० राजनारायनजी के निधन पर, जिन्होंने अपनी मातृभूमि की स्वतन्त्रता के लिये अपने को बलिदान किया है, और इससे जो महान क्षति देश की हुई है, *शोक प्रकट करती है तथा अपनी*

श्रद्धाञ्जलि अर्पित करना है और उनकी आत्मा की चिर-शान्ति के लिये यह प्रतिज्ञा करती है कि उनके इस अधूरे कार्य को सफलता तक पहुँचाने के लिये आजीवन सतत प्रयत्न करती रहेगी। साथ ही यह उनके दुखी परिवार के प्रति समवेदना प्रकट करते हुये आशा करती है कि वह धैर्य धारण करने में समर्थ होगी।"

उपस्थिति सर्व श्री अवधशरण, हंसराज, राजबली (काग्रेस-समाजवादी) और कैलाश पति मिश्र (क्रान्तिकारी-समाजवादी) भी थी।

* * *

बलिया जिले के प्रमुख क्रान्तिकारी-समाजवादी कार्यकर्ता और नन्दगंज-ट्रेन डकैती-केस के अन्यतम बन्दी का० कामता सिंह ने लखनऊ-सेन्ट्रल-जेल से निम्न रिपोर्ट भेजी था

"ता० १० दिसम्बर की कार्यवाही।—

ता० १० को लखनऊ से० जेल के 'सी' क्लास राजनीतिक बन्दियों की एक सभा अ-बल चक्कर में जिसके सभापति श्रीमान् प० शिवदत्त जी तिवारी अल्मोड़ा थे हुई। उस सभा में पं० चन्द्र-भूषण जी त्रिपाठी (R. S. P.) हरदोई, ठा० कामतासिंह जी, (R. S. P.) बलिया, ठा० सत्यदेव सिंह जी फैजाबाद, प० रामस्वरूप जी पांडे खीरी, लखीम पुर ठा० दीवानसिंहजी अल्मोरा और प० राम सागर जी पाठक (R. S. P.) कानपुर ने का० राजनारायन जी मिश्रा की वीर गति पर और उनकी जीवनी पर प्रकाश डालते हुये श्रद्धाञ्जलि अर्पित की प० चन्द्र

भूषण जी त्रिपाठी, ठा० कामता सिंह, पं० राम सागर पाण्डेय ने कहा—आज हम का० राजनारायन के शहीद होने पर यह जलसा कर रहे हैं और का० राजनारायन के बताये हुये कर्तव्य-पथ के पथिक बनने की दृढ़ प्रतिज्ञा करते हैं। राजनारायन आज अमर हो गये। वह हममे, सबके बीच, मौजूद हैं, और हमारी सबकी कार्य-विधि का निरीक्षण कर रहे हैं। हम उनकी आत्मा को तभी शान्ति पहुँचा सकते हैं, हम उनको तभी पा सकते हैं, हम उनके कार्य-भार को तभी पूरा कर सकते हैं, जब उनके इङ्गित किये हुये मार्ग पर चलें। आज हिन्दोस्तान की आजादी के जंग मे कौन व्यक्ति का० राजनारायन बनना चाहता है? अगर का० राजनारायन का साथी बनना है तो एक कदम आगे बढ़ाओ, और अरमानों की होली खेल लो, फिर ऐसा सुअवसर नहीं मिल सकता है। यही समय का तकाजा है। और युग-युग के इतिहास की पुकार है। हम कॉ० राजनारायन के प्रति समवेदना अगर प्रकट करना चाहते हैं, तो हमारा यही सत्य-धर्म है कि हम उनके अधूरे कार्य को पूरा कर दिखायें, तभी वह सच्ची समवेदना होगी अन्यथा हमको कायरों की भांति घरों में लहँगे पहन कर चुपचाप बैठ जाना चाहिये।

इसके पश्चात् पं० रामसागर जी पाण्डेय, कानपुर, ने शोक प्रस्ताव रखा जिसका समर्थन ठा० कामता सिंहजी बलिया ने किया और अनुमोदन पं० चन्द्रभूषण जी त्रिपाठी, हरदोई, ने किया,

प्रस्ताव की नकल यह है:—

शोक प्रस्ताव

"भारत-माता की गोदी के लाल, भारतीय-स्वतत्रता के अटूट प्रेमी और सेनानी, तथा शान्तिमती कॉ० राजनारायन जी मिश्रा की वीर गति पर तथा उनके शोक-सन्तप्त परिवार के प्रति हार्दिक सहानुभूति रखते हुये, यह सभा समवेदना प्रकट करती है और ईश्वर से प्रार्थना करती है कि वह शोक-सन्तप्त परिवार तथा दिवंगत-आत्मा को शान्ति प्रदान करे। साथ ही साथ सरकार के का० राजनारायन के साथ किये गये इस व्यवहार की घोरतम शब्दों मे निन्दा करती है।"

सम्पूर्ण दिन सभी राजबन्दियो ने व्रत रखा तथा काम की भी हड़ताल रही। मीटिंग की कार्यवाही के पश्चात सभी लोगो ने खड़े होकर, मौन रह कर, ईश्वर से कॉ० राजनारायन की शान्ति के हेतु प्रार्थना की और कार्यवाही समाप्त हो गई।"

इसके पहले (कार्यवाही शुरू होने पर),
निम्नलिखित लोगों की कवितायें हुईं जो इस प्रकार हैः—

(१)

प्यारे राज जाते हो तो जाओ है बधाई तुम्हे,
कृषक दशा के प्रतीक बन जाना तुम।
जा चुके पहले तुमसे हैं जो बन्धुगण,
उन्हे सब भाति से सन्तोष दिलाना तुम॥
भाई पुनर्जन्म हेतु पूछे पुनि ब्रह्म जो,
अपने देश वासिन की दशा ([illegible]

कृष्ण सम संकट मिटाइबे फिर पुनः

पुनि भारत के उज्ज्वल भविष्य बन आना तुम ॥

—चन्द्रभूषण तिवारी, हरदोई

हे तरुण तपस्वी साधुवाद !

गृह से सब नाता तोड़ ताड़,
प्रिय पत्नी पुत्र को छोड़ छाड़।
सुर पुर से नाता जोड़ जाड़,
पूंजीपतियों से कर होड़ हाड़।
इस शोक करें या दर्प करें ?
अब होता इससे क्या बिगाड़,
तुम जीवन नैय्या फेर चले,
निर्मोही तुमको धन्यवाद।
हे तरुण तपस्वी ! साधुवाद !!

रणभेरी के बज उठने पर,
भारत मां के आवाहन पर।
बहुतों ने सीने अड़ा दिये,
सगीनों पर तलवारों पर।
पर तुम्हीं उतरे एक खरे,
उस अन्तिम क्लिष्ट कसौटी पर।
लेगी बलि तो है निर्विवाद।
हे तरुण तपस्वी ! साधुवाद !!

तुम अमर हुये हो मर कर के।
हम सभी शपथ को ले कर के।
कर्तव्य समझ प्रतिक्रिया रूप,
कहते हैं हाथ उठा कर के।
पूरा कर दें उद्देश्य तेरा,
चाहे हम मानें कोई 'वाद'।
हे तरुण तपस्वी ! साधुवाद !!

चन्द्रभूषण त्रिपाठी

(३)

मेरे शहीद, मन के भावों को कैसे व्यक्त करूं ?
उठती हुई मूक वेदना का कैसे उपचार करूं ?
कैसे कागज में भर दूं भाई की दुखद जुदाई ?
हृद् तंत्री के हर तारों से प्रतिक्षण आती मुझे रुलाई।
बुलबुल बिलख्या करती होगी किस विधि ?
माँ बहनों की छाती फटती होगी किस विधि ?
भाई अलग खड़े चिल्लाते होंगे,
प्रेमी जन अश्रु-बिन्दु बरसाते होंगे,
अत्याचारी ने दीन दुखी जन की निधि छीना।
उफ ! उसके मन में भरा हुआ है कितना कीना !
देश-प्रेम मतवाले राजनारायन को हमसे छीना !!
हम मौन बने जिसका मतलब स्पष्ट है विष पीना !!!
माता की गोदी खाली होती है, होने से

आजाद, भगतसिंह के पथ में बढ़ने दे,
माता के बन्धन के टुकड़े-टुकड़े करने दे,
राजू ! तेरी याद हमें उस दम तक आयेगी।
भारत मां की बन्धन-कड़ियां टूक-टूक कर दी जावेंगी !!
लाखों मां के लाल बढ़ेंगे तेरे पथ पर,
कोटि-कोटि जयनाद करेंगे तेरे पथ पर !!!

—कामता सिंह, बलिया।

(४)

हा ! कैसा यह वज्रपात !
लुट गये अभागे कर रहे अश्रुपात !!
ओ भारत मां के वीर लाल !
ओ आजादी के दीवाने !
ओ महा मनस्वी क्रान्ति दूत,
ओ स्वतंत्रता के परवाने !
करुणों का क्रन्दन पड़ा कान,
धर रुद्र रूप हो सावधान;
ले कर कर में करवाल बढ़े;
करने मां की अमर शान।
तू खेल गया निज प्राणों पर, दुश्मन की छाती में कर पदाघात,
है कैसा यह वज्रपात।
स्वतंत्रता की बलिवेदी पर,
माँ को देने निज गात दान;

परतंत्रता—शाप से छुटकारा लेने,
तू चला खोजने स्वर्णिम विहान ।
ओ अमर देश के अमर पुजारी,
जाओ सहर्ष पाना मान;
सुर बालायें गा रहीं स्वर्ग में,
तेरे गुण-गौरव के अमर गान !!
रिम-झिम झरते पुष्प गगन से, हो रहा स्वतंत्रता का प्रभात;
हा, कैसा यह वज्रपात !
साक्षी स्वरूप यह अम्बर है,
घर-घर गूंजेगा अब क्रान्तिनाद;
नर-नारी बच्चे-युवा तलक,
अब बने प्रचारक साम्यवाद !!
अस्त !दिवाकर हो प्राची में,
भूधर भी टुकड़े-टुकड़े हो जाये,
तारा गण भी सब नष्ट भ्रष्ट हों,
छिति अम्बर मिल कर टकरा जावें !!
सप्त-सिन्धु भी भले ही शुष्क हों,
पर अपने अरि को देंगे निपात
हा कैसा यह वज्रपात !!
माया का पर्दा फाश किया,
सुर पुर से नाता जोड़ा,
निज स्वजनों को छोड़ भँवर में,

पुत्र पत्नी से मुख मोड़ा !!
औ सत्य-धर्म के सत्य व्रती, सुर पुर में अब करता आराम
हम तो तेरे इंगित पथ के फकीर हैं;
मेरा युग-युग लों लेना प्रणाम !!
अश्रु नहीं यह नयन पुष्प हैं;
निर्झर झरते हो गये जल प्रपात । हा कैसा…
—रामसागर पाण्डेय, कानपुर।

(६)

९ अगस्त ४४ को लखनऊ-जिला जेल के सभी राजबन्दियों ने शहीद दिवस मनाया था। उसमें श्री व्रज बहादुर जी (कांग्रेस-समाजवादी) ने अमर शहीद का० राजनारायन की शहादत पर निम्न कविता सुनाई थी:—

काश ; हम भी जो कहीं देश पै कुर्बां होते ।
छुटने वाले न कभी छुट के परेशां होते ।
लाख कोशिश की मगर भुलाया न गया ।
पर्दये दिल से तेरा नक्शा वो मिटाया न गया ॥
जुल्म बाकी है बचा कौन जो ढाया न गया ।
उफ! कहने को मगर लब भी हिलाया न गया ॥
एक तरफ हैफ वह पुर जोश था नन्हा दिल ।
दूसरी ओर लिये तेग खड़ा था कातिल ॥
तुमसे हिम्मत के धनी बन न सके थे बिस्मिल ।
जब कि मिनटों में खत्म होती थी तेरी मंजिल ॥

हाय तड़पने को तड़प यदि तुम्हारी आती ।
मरने वाले ! तेरी सूरत भी दिखा जाती ।।
जोश लाती है कभी सोज भी दे जाती ।
हर तरह दिल में यह तस्कीन बंधा जाती ।।
छुटने वाले न मुझे कुछ भी शिकायत बाकी ।
यक बची याद औ दिल में मुहब्बत बाकी ।।
पर्दये दिल पै है तेरी आज भी सूरत बाकी ।
ऐ शहीदाने वतन ! तेरी दिल में है इज्जत बाकी ।।
है शहीदाने '४२ में तुम्हारी गिनती ।
उस बगावत में थी जां की लगाई बाजी ।।
हर तरफ जोश था उठी थी वह गुलामी—
माँ की लमहों में मिटी थी सदियों की गुलामी ।।
लाडले माँ के सपूतों को निराला देखा ।
प्यार उल्फत से उन्हें मा ने था पाला देखा ।।
जेल में उनको भी लाके था डाला देखा ।
बड़ी मुसीबत पै भी उन्हें हँसने ही वाला देखा ।।
आखिरी वक्त था और सामने वह मुर्दनी का मंजर ।
कल की विधवा थी खड़ी नर्मों को लिये दर पर ।।
उसकी आँखों से सभा अश्क को देखा मजदर ।
किस तरह शान से मुड़ करके कहा था कमनर ।।
देश भक्तों को कभी किसने है रोते देखा ?
ख्वाबे गफलत में उन्हें किसने है सोते देखा ।।

पुत्ररु पत्नी से सुख मात्रा॥

ओ सत्य धर्म के सत्य व्रती, सुर पुर में अब करता आराम।

हम तो तेरे इंगित पथ के फकीर हैं,

मेरा युग-युग लो लेना प्रणाम॥

अश्रु नहीं यह नयन पुष्प हैं,

निर्झर झरते हो गये जल प्रपात। हा कैसा

—रामसागर पाण्डेय, कानपुर।

(५)

९ अगस्त ४८ को लखनऊ-जिला जेल के सभी राजबन्दियों ने शहीद दिवस मनाया था। उसमें श्री ब्रज बहादुर जी (कांग्रेस-समाजवादी) ने अमर शहीद का० राजनारायन की शहादत पर निम्न कविता सुनाई थी—

काश, हम भी जो कहीं देश पै कुर्बा होते।

छुटने वाले न कभी छुट के परेशा होते।

लाख कोशिश की मगर भुलाया न गया।

पर्दये दिल से तेरा नक्शा वो मिटाया न गया॥

जुल्म बाकी है बचा कौन जो ढाया न गया।

उफ! कहने को मगर लब भी हिलाया न गया॥

एक तरफ है वह पुर जोश था नन्हा दिल।

दूसरी ओर लिये तग खड़ा था कातिल॥

तुमसे हिम्मत के धनी बन न सके थे बिस्मिल।

जय कि मिनटों में खत्म होती थी तेरी मंजिल॥

हाय तड़पने की तड़प यादि तुम्हारी आती।
मरने वाले! तेरी सूरत भी दिखा जाती ॥
जोश लाती है कभी सोज भी दे जाती।
हर तरह दिल में वह तस्कीन बंधा जाती ॥
छुटने वाले न मुझे कुछ भी शिकायत बाकी।
यह बची याद औ दिल में मुहब्बत बाकी ॥
पर्दये दिल पै है तेरी आज भी सूरत बाकी।
ऐ शहीदाने वतन तेरी दिल में है इज्जत बाकी ॥
है शहीदाने ..... में तुम्हारी गिनती।
उस बगावत में थी जां की लगाई बाजी ॥
हर तरफ जोश था उठी थी वह गुलामी।
माँ की लगहों में मिटी थी सदियों की गुलामी ॥
लाडले माँ के सपूतो को निराला देखा।
प्यार उल्फत से उन्हें माँ ने था पाला देखा ॥
जेल में उनको भी लाके था डाला देखा।
बड़ी मुसीबत पै भी उन्हें हँसने ही वाला देखा ॥
आखिरी वक्त था और सामने वह मुर्दनी का मंजर।
कल थी निधवा थी खड़ी बच्चों को लिये दर पर ॥
उनकी आँखों में भी अश्क को देखा मकदूर।
किस तरह शान से मुख करके कहा था कमतर ॥
देश भक्तों को कभी किसने है रोते देखा ?
प्यारे गफलत में उन्हें किसने है सोते देखा ॥

गौहरे अश्क उन्हें फ़र्श पै किसने है बोते देखा।
हमने देखा है मुसीबत में उन्हें हर वक़्त ही हँसते देखा।
वास्ते देश के क्या जान है जाती जाये।
फिर भी माता की न आन पै बट्टा आये''॥
हमसे दुनिया का कोई आराम भी जो पाये।
रंज होगा न अगर जल्लाद ही लटकाये''॥
आखिरी हैफ़ वसीयत कि तेरा लख्ते जिगर।
तुझ सा होता वह फ़िदा मां के इशारों पर ॥
तुझको होती न कहीं चैन व तस्कीन अगर।
लफ़्ज़ हिम्मत के न आते ये जुबां पर बेहतर ''॥
कुछ भी हो शाने शहादत की निभाया तूने।
हर तरह नाम भी माता का बढ़ाया तूने' ॥
जोशो हिम्मत का नया तर्ज़ दिखाया तूने।
कितने सोते थे जिन्हें मर के जगाया तूने' ॥
भूलने वाले अगर भुलाते ही जांय।
यह भी मुमकिन है नहीं तुमको भुला पायें''॥
सबकी ख्वाहिश है तुझे दिल में बिठा जांय—
गीत हिम्मत के तेरे शान से सब गायें ॥
देश-भक्तों की सफ़ों में तुमने जगह ले ली—
एक लमहे को तुमने न दिखाई पस्ती ॥
तुमसे उल्फ़त है न यों तुमको भुला पायेंगे—
दाग़ो फ़ुरक़त के कड़े हैं न मिटा पायेंगे''॥

लोग कहते हैं गलत वादा न निभा पायेंगे— ,
और हम सभी देश आजाद न बना पायेंगे"'॥
आखिरी लफ्ज ये तुमसे शहीदाने वतन !
तुमसे अपना है सहारा मेरी शाने वतन ॥
अहद अपना है, यही, हम भी हो कुरबाने वतन ।
मिल के मिट्टी में उठें बन के हम शाने वतन ॥

वृज बहादुर श्रीवास्तव।

(६)

उसी दिन श्री तहव्वर अली खां नामक एक साधारण वन्दा ने अमर शहीद डॉ० राजनारायन का लक्ष्य करके एक कविता सुनाई थी:—

हमे फिर आज वह भूला फिसाना याद आता है,
जहां वह माहे अगस्त आया तराना याद आता है।
मेरे बेताब आंसू खुद ब खुद गिरते हैं दामां पर,
जहां चर्चिल का कारे मुजरिमाना याद आता है।
जहां में जो मिटाते थे हवस औ मुल्क गीरी को,
उन्हीं को आज पावन्दे सलासल कर दिया उसने।
यही चर्चिल है जिनके मक्र से सारा जहां उजड़ा,
यही चर्चिल है जिनके हुकुम से हिन्दोस्तां उजड़ा।
महाविन बागियों के औ महाफिज बादशाहों के,
उन्हीं की चश्म पोशी से हमारा गुलसितां उजड़ा।
जमाना खून से लिखेगा फिर से दासतां उनकी,

जरा ठेरो छिपेगी जर परस्ती अब कहां उनकी।
मुहब्बाने वतन से भर दिया था जेलखाने को,
तरसते थे हमारे मर्द जब सब आबदाने को।
किसी के बेड़ियां डाली कोई था हथकड़ी पहने,
कोई टिकठी से बाधा जा रहा था बेंत खाने को।
वतन के नाम पर अहले वतन कुरबान होते थे,
रकीबाने जहा शर्मिन्दा व हैरान होते थे।
यकायक एक लरजिश आ गई थी दस्त कातिल पर,
कफ़न बांधे हुये जब मर्द जन निकले थे मकतल पर।
चढ़ाते मादरे हिन्दी पर सब थे ख़ून दिल अपना,
पसे पर्दः हजार अरमां छिपे थे खून बिस्मिल पर।
तेरा जुल्मो सितम जालिम पयामे जंग लायेगा,
न घबरा एक दिन ख़ूने शहीदां रंग लायेगा।
मुबारक राजनारायन शहादत ऐसी होती है,
वतन की लाज पर मरने की चाहत ऐसी होती है।
सदायें इन्कलाबी गूंजती थीं जेल खाने में,
गमों की बदलियां फिर छायेंगी सारे जमाने में।
कोई कहता था अब जाता है वह खूने जिगर देने,
वतन का लाल हसता जा रहा है अपना सर देने।
हजारों को रुलायेगी जहाँ में यादगार उसकी,
खिजा बन कर निराला रंग लायेगी बहार उसकी।
कहीं फिर रायगां जायेगी यह मासूम कुर्बानी,

नया तूफान उठायेगी निगाहे अश्क बार उसकी।
समझ लो ऐ हरीफाने वतन अब भी वही दम है,
हमें परदा नही घर में हमारे गर ये मातम है।
उठो मजदूरो जागो सुर्ख झण्डा लहलहाता है,
मुसल्ला इन्कलाबी जंग का पैगाम लाता है।
तुम्हें लेना है बदला खूने नाहक का हुकूमत से,
वतन का जर्रे जर्रः अब यही मजदह सुनाता है।
जहां से तुम जला कर खाक कर दो जर परस्ती को,
जमाने में बुलन्दी पर दिखा दो अपनी हस्ती को।
हम अपने खून से सींचेंगे जब अपना वतन फिर से,
बंधा होगा हमारे लाल झंडे का कफन सिर से।
तसल्ली मिल ही जायगी मेरे हसरत भरे दिल को,
भला होगा निकल आयेंगे आंसू दीदये तर से।
हम अपनी ताकते बाजू जमाने को दिखा देंगे.
मुकम्मिल तंगदस्ती को जमाने से मिटा देंगे।
मुबारक हो वतन की इन्क़लाबी शान जिन्दाबाद,
हमारी आबरू औ मुल्क हिन्दोस्तान जिन्दाबाद।

तहव्वर अली खां

(७)

कॉ० कैलाश पति मिश्र ने तनहाई में हुई शोक सभा की रिपोर्ट के साथ स्वरचित निम्न कविता भी भेजा था। यह कविता कैलाश ने साथी राजनारायन को मिलाई के समय सुनाई थी।

ओ, शून्य लोक के वासी, ओ, गौरव गरिमा के महान।
कर रहा व्यथित है मुझको, तेरा यह चिर-प्रस्थान ॥१॥
इस जग को छोड़ चले तुम, इक दुनिया नई बसाने।
भारत माँ की वलि वेदी पै, अपना शीश चढ़ाने ॥२॥
जाओ भाई देर हुई अब, है अब महा मिलन की बारी।
नव वसन्त-से सुरभित हो, यह पतझड़ वाली क्यारी। ३॥
महा प्रलय के भीषण रव में, परिणित होगा तव वलिदान।
अमर शहीदों द्वारा निर्मित, नव-युग के रण-थल मैदान ॥४॥
मिट कर भी अवशेष अमिट तुम, संसृति में जीवन भरनेको।
भूतल के मानव-शोषण को, क्षार-भार-सम करने को ॥५॥
है मिटने की यह राह भली, है भला तुम्हारा यह जीवन लेखा
निज जननी की मुक्ति हेतु, किसने यह तेरा मिटना देखा ॥६॥
बाजी ले चले अगर, लोक को, मेरा सन्देश सुनाना।
अरमानों में सफल हुये तुम, मुझको भी सफल बनाना ॥७॥
मैं महा अकिंचन, तुम हो, महालोक के त्राता।
दूं विदा कौन विधि तुमको, वन्दी-जीवन में भ्राता ॥८॥
जाओ, तुम मुख म्लान न होवे, शान्ति-धैर्य धारण करना।
आजीवन तव आदेश शीश, प्रति फल हो जीना या मरना ॥९॥
तुम हो अमिट महान प्रवर, टूटेंगी माँ की कड़ियाँ।
है अमिट दिगम्बर नौ धन्य, यह शनिवार की घड़ियाँ ॥१०॥

कैलास पति मिश्र

क्रान्तिकारी-समाजवाद

१० और १२ दिसम्बर के अखबारों में फाँसी की खबर प्रकाशित हुई। ता०१३ को समाचार-पत्रों से ज्ञात हुआ कि कानपूर में उनकी अन्त्येष्टि-क्रिया गंगा-तट पर सम्पन्न हुई। वहाँ कानपूर के सभी प्रमुख कांग्रेस-जन उपस्थित थे। उस दिन कानपूर के विद्यार्थियों ने जगह २ पर हड़ताल भी की थी और शोक-सभा की। लखनऊ में भी कई स्कूल-कालेज बन्द थे। प्रदर्शन अथवा जुलूस की आज्ञा कहीं भी अधिकारियों ने नहीं दी थी। लटकती लाश को हमारे जिला जेल के कॉ० मोती और कॉ० महादेव के नेतृत्व में ६ राजवन्दियों ने उतारा था तथा उसे फूल-मालायें पहनाई थीं। उसके बाद बाहर से स्थानीय कांग्रेस-जन, खिड़की की राह जेल के अन्दर आये और लाश को स्नान कराकर उसे तिरंगे झंडे में लपेटा और तब बाहर ले जा कर अर्थी पर रखा। अर्थी और लाश फूल-मालाओं से ढकी थी। उसके बाद मृत-देह मोटर से कानपूर ले जाई गई।

बाद में समाचार-पत्रों से ज्ञात हुआ कि श्री फीरोज गांधी ने महात्मा गांधी को लिखा कि कॉ० राजनारायन की धर्मपत्नी श्रीमती विद्यावती देवी तथा उनके दो नन्हें बच्चों को वर्धा महिला-आश्रम में बुला लिया जाय।

'आज' में पुनः उनके विषय क; विस्तृत समाचार १५ दिसम्बर को प्रकाशित हुआ और १६ दिसम्बर को उन पर एक सुन्दर टिप्पणी प्रकाशित हुई। गाजीपुर जिला कांग्रेस-प्रतिनिधि-असेम्बली ने उनकी फाँसी पर एक शोक प्रस्ताव पास किया।

और उनके स्वयं अपने जिले ग्वारी में 'राजनारायन-स्मारक-कोष' स्थापित हुआ। पत्रिका के एक विशेष लेख (ले० राम भाई) में उन्हें श्रद्धाञ्जलि अर्पित की गई थी।

इन्कलाब—जिन्दाबाद
कॉ० राजनारायन—जिन्दाबाद
साम्राज्यवाद का नाश हो
झारखण्डे राय

———

शहीद राजनारायण के अन्तिम पत्र की जो उन्होंने फाँसी घर से लिखा था अविकल प्रतिलिपि दी जा रही है।

POST CARD

ADDRESS ONLY

INDIA POSTAGE

Central Jail

Fatehgarh

U. P.

अन्तिम पत्र का दूसरा हिस्सा।

राजनारायण के पहले पत्र का अन्तिम भाग।

क्रान्ति के अग्रदूत

जिन्होंने अपने खून से आजादी के पौधे को
सींच सींच कर पनपाया।

मुद्रक शारदा प्रसाद जायसवाल देश सेवा प्रेस इलाहाबाद।